राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई,उत्तरप्रदेश,बिहार,राजस्थान,मध्यप्रदेश,उतरांचल,उत्तराखंड,दिल्ली,हरियाणा में प्रसारीत

सुरत-गुजरात,संस्करण गुरुवार, 23 दिसंबर-2021 वर्ष-4,अंक-329 पृष्ठ-08 मूल्य-01रूपये

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में प्रेसनोट,नोटिस,वेपार संबंधित संपर्क करें

पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023

संपर्क नं.-9879141480

ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सूरत के देवध गांव के विजेता सरपंच के समर्थकों पर हमला

हारे हुए प्रत्याशी के समर्थकों ने कार से खींचकर मारपीट की

क्रांति समय,सूरत

सूरत के गोददरा के देवध गांव में विजयी सरपंच प्रत्याशी के समर्थकों को रास्ते में धमकाया और पीटा गया. इतना ही नहीं, बल्कि नकाबपोश हमलावरों ने लग्जरी ऑडी कार को भी टक्कर मार दी और कार से उतरकर महिलाओं और पुरुषों की हत्या कर दी, जिससे तनावपूर्ण माहौल बन गया। हालांकि, घायल अमीबेन उर्फ अंजनाबेन ने आरोप लगाया कि पुलिस को सूचित करने के बावजूद कि हमलावर भाग गए थे और तीन दिनों से धमकियां मिल रही थीं, पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। समर्थकों में

बाबल अमीबेन उर्फ अंजनाबेन (घायल) ने कहा कि फिलहाल ग्राम पंचायत चुनाव के नतीजे आ गए हैं. हम वनीताबेन राजेशभाई पटेल सरपंच उम्मीदवार के समर्थक हैं। विपक्ष में हरगोविंदभाई रबारी परिवार खोई हुई शिल्पाबेन सुरेशभाई रबारी का समर्थक है. तीन दिनों तक हम मजबूर होकर घर आए और फोन पर शिल्पाबेन का साथ दिया। इतना ही नहीं घर पर आकर धमकी देने लगे। जैसे ही परिणाम घोषित किए गए, वनिताबेन ने जीत की घोषणा करते हुए सदन में प्रवेश किया। गाली-गलौज करने पर जान से मारने की धमकी दी। हम एक ऑडी कार में पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराने जा रहे थे। हमले के आधे रास्ते में, नकाबपोश हमलावरों ने हाथों में लाठी और पैडल लेकर हमारी कार को रोक लिया। जब मैं कार से उतर कर समझाने गई तो उन्होंने मेरे साथ हाथापाई की और मेरे पति रणवीर सिंह को कार से बाहर निकाला और सार्वजनिक रूप से मारा. बचाव के लिए गए 5 लोगों के बारे में भी कहा जा सकता है कि उन्होंने हमारे गांव में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए हम पर हमला किया था। सोसाइटी फॉल पार्ट टू भी विजेता है जो कि हारने वाला उम्मीदवार है, सूत्रों के अनुसार सपोटारो में स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाले चुनाव को रॉकी ग्रीटिंग सपोटारोन उम्मीदवारों को सड़क पर हमला करने के लिए समाज के दो वर्गों में विभाजित किया गया था। फिलहाल गोददरा पुलिस ने मौके पर सुरक्षा के इंतजाम कर लिए हैं और आगे की जांच कर रही है।

घायल सूची

1-जयेशभाई वसिया
2-रणवीर सिंह वसिया
3-अमीबेन रणवीर सिंह
4-नरेंद्रसिंह रामसिंह वसिया

भर्ती, भ्रष्टाचार, भाजपा तीनों भाई-बहन जैसे और इनके बीच बहुत घनिष्ठ संबंध हैं:कांग्रेस

क्रांति समय,सूरत

अहमदाबाद, हेड क्लर्क परीक्षा के पर्चे लीक मुद्दे पर गुजरात कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष अर्जुन मोढ़वाडिया ने राज्य की भाजपा सरकार पर तंज कसते हुए कहा कि भर्ती, भ्रष्टाचार और भाजपा यह तीनों भाई बहन की तरह है तथा इनके बीच बहुत घनिष्ठ संबंध है। उन्होंने गुजरात के पेपर लीक मामले को मध्यप्रदेश के व्यापम घोटाले से बड़ा बताया है। अर्जुन मोढवाडिया ने कहा कि पूरे देश में जिन क्लास 1-2 अधिकारियों की भर्ती होनी चाहिए तो भारत और राज्य के कानून के मुताबिक यूपीएससी और राज्य में गुजरात पब्लिक सर्विस कमीशन (जीपीएससी) के तहत भर्ती करनी चाहिए। अभी तक इस प्रक्रिया के तहत क्लास 1-2 के बाद स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी हो या फिर कोई भी भर्ती संपूर्ण गैर कानूनी मानी जाती है। उन्होंने कहा कि ऐसा

पहली बार हुआ है जब सूचना अधिकार, क्लास 1, 2 और 3 की भर्ती प्रक्रिया जीपीएससी की तहत प्रतिष्ठित संस्थान को देने के बजाय सरकार ने एक भर्ती समिति बनायी हैं। जिसका इरादा कमलम में से आने वाली सूची पर होता है। उन्होंने कहा कि वर्ग-1 और वर्ग-2 में अनुक्रम 8 और 15 भर्ती करनी थी। जिसमें 1200 प्रतियोगियों ने अर्जी की थी। परीक्षा राज्य सरकार को लेने के बजाय निजी एजेंसी साथ रख परीक्षा दिलाई गयी। अर्जुन मोढ़वाडिया ने आरोप लगाया है कि राज्य सरकार के पास परीक्षा बोर्ड है, अपनी एक व्यवस्था है तो निजी कंपनियों को परीक्षा का कार्रवाई सौंपने का क्या मतलब है। राज्य सरकार के नेतृत्व हुई अभी तक जितनी भी परीक्षा है सब में भ्रष्टाचार हुआ है। उन्होंने कहा कि गुजरात सरकार की विभागीय और गौण सेवा पसंदगी मंडल के मार्फत होनेवाली चयन प्रक्रिया में धांधली होती ही है, लेकिन वर्ग 1 और 2 की परीक्षाएं तो जीपीएससी के जरिए कराने का कानूनी प्रावधान होने के बावजूद किन कारणों से ये परीक्षाएं विभाग की ओर से बाहर की एजेंसी को सौंपने का आखिर कारण क्या था? परीक्षा पूर्ण होने के बाद विशेषज्ञों की नियुक्ति में सिफारिश क्यों की गई?

महिलाएं और एससी/एसटी/ओबीसी/ईबीसी आरक्षण के मापदंड क्यों नजरअंदाज किए गए? सरकार को इन सभी सवालों को जवाब देना चाहिए और इसके दोषियों को गिरफ्तार कर ये परीक्षाएं जीपीएससी द्वारा लिए जाने की अर्जुन मोढवाडिया ने मांग की है।

पेपर लीक मुद्दे पर घमासान जारी, अनशन करने से पहले आप नेता हिरासत में लिए गए

क्रांति समय,सूरत

अहमदाबाद, हेड क्लर्क परीक्षा के पर्चे लीक होने के मुद्दे पर राज्य में राजनीतिक दलों के बीच घमासान जारी है। कांग्रेस और आम आदमी पार्टी गुजरात गौण सेवा पसंदगी मंडल के अध्यक्ष असित वोरा के इस्तीफे की मांग को लेकर विभिन्न शहरों में प्रदर्शन कर रही है। अहमदाबाद में आम आदमी पार्टी के नेता उपवास पर बैठे उससे पहले पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। दूसरी ओर कांग्रेस की बाइक रैली को देखते हुए पार्टी मुख्यालय पर बड़ी संख्या में पुलिस जवानों को तैनात कर दिया गया। आम आदमी पार्टी के प्रदेश कार्यालय में पेपर लीक, असित वोरा के इस्तीफे की मांग और कमलम में प्रदर्शन करने पर आप कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी को लेकर पत्रकार परिषद का आयोजन किया गया था। जिसमें दिल्ली के विधायक और आप के गुजरात प्रभारी गुलाबसिंह यादव, प्रदेश नेता महेश सवाणी, संगठन महासचिव मनोज सोरठिया, महासचिव सागर रबारी ने पेपर लीक मुद्दे पर सरकार को आडे हाथ लिया। गुलाबसिंह ने कहा कि इस पूरे षडयंत्र के

पीछे मंडल के अध्यक्ष असित वोरा हैं, इसके बावजूद उनके खिलाफ साजिश की धाराओं के तहत केस दर्ज नहीं किया जा रहा। उल्टे आम आदमी पार्टी के निर्दोष कार्यकर्ताओं के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत मुकद्दमा दर्ज कर जेल में डाल दिया है। असित वोरा के कुकर्मों की सजा राज्य के 88000 उम्मीदवारों के परिवार भुगत रहे हैं। इसुदान गढवी पर छेड़छाड़ के आरोप को खारिज करते हुए यादव ने कहा कि भाजपा मुख्यालय कमलम में जगह जगह सीसीटीवी कैमरे लगे हैं, यदि छेड़छाड़ की घटना हुई है तो उसके सबूत सामने लाए जाने चाहिएं। उन्होंने कहा कि श्रद्धा राजबूत नेशनल हेल्थ मिशन में काम करती हैं और सरकार से वेतन भी लेती हैं तथा भाजपा कार्यालय में बैठकर फर्जी आरोप लगाती है। गुलाबसिंह ने प्रदेश भाजपा प्रमुख सीआर पाटील और गृह राज्यमंत्री की बयानों पर आश्चर्य जताया और कहा कि ये लोग इतनी बेशर्मी कहां से लाते हैं। जिसके बाद गुलाबसिंह यादव और महेश सवाणी ने अन्न त्याग करने की घोषणा की और कहा कि कलेक्ट्रेट पर धरना देंगे। लेकिन आप के नेता अनशन पर बैठें उससे पहले पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया। दूसरी ओर गुजरात प्रदेश कांग्रेस ने भी पेपर लीक मामले को लेकर पार्टी कार्यालय से गांधी आश्रम तक बाइक रैली का आयोजन किया था। कांग्रेस मुख्यालय पर बड़ी संख्या में कार्यकर्ता जमा हुए और सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू की। हांलाकि पुलिस ने कांग्रेस की बाइक रैली को मंजूरी नहीं दी और कांग्रेस कार्यालय पर बड़ी संख्या में जवानों को तैनात कर दिया। कांग्रेस कार्यकर्ता बाइक रैला न निकाल पाएं, इस प्रकार पुलिस ने वाहन लगा दिए।

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में प्रेसनोट,नोटिस,वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-9879141480
ईमेल:-krantisamay@gmail.com

समस्या आपकी हमें भेजे

अपने क्षेत्र में समस्याएं हमें लिखे या बताएँ और समस्याएं का हल संबंधित विभाग से मिलेगा
मोबाईल:-987914180
या फोटा,वीडियो हमें भेजे

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार
भारत के अन्य राज्यों में जिला ब्यूरों और अन्य शहर,ग्राम में पत्रकारों की नियुक्त के लिए आवेदन कर सकते है
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-9879141480
ईमेल:-krantisamay@gmail.com

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सुविचार बड़ा सोचे, जल्दी सोचे, आगे सोचे विचारों पर किसी का एकाधिकार नहीं है। - धीरूभाई अंबानी

संपादकीय

सख्त निगरानी का समय

बीस यू-ट्यूब चैनलों और दो वेबसाइटों को भारत-विरोधी दुष्प्रचार का दोषी मानते हुए सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा ब्लॉक किए जाने और यू-ट्यूब प्रबंधन को इनके खिलाफ सख्त कार्रवाई का निर्देश बताता है कि वर्चुअल दुनिया की गतिविधियां अब कितनी गंभीर हो चली हैं और इन गतिविधियों ने कितने व्यापक रूप से समाज को प्रभावित करना शुरू कर दिया है। आंकड़े तस्दीक करते हैं कि इन चैनलों ने कितनी बड़ी पहुंच बना ली थी। इन तमाम चैनलों के 'सब्सक्राइबर्स' की संख्या 35 लाख से ऊपर पहुंच गई थी और उनके 'वीडियोज' को 55 करोड़ से भी अधिक बार देखा जा चुका था। जाहिर है, इनके विष वमन को बंद करना बहुत जरूरी था। कायदे से यह कार्रवाई उसी समय हो जानी चाहिए थी, जब इन चैनलों के खिलाफ नियामक संस्था में पहली शिकायतें आई थीं। चूंकि साइबर दुनिया की प्रकृति ही ऐसी है कि यहां मिनटों में असंख्य लोगों तक पहुंच बन जाती है, ऐसे में इसकी निगरानी करने वाले तंत्र को भी उतनी ही तत्परता बरतनी चाहिए। यह पहली बार नहीं है, जब भारत के खिलाफ इस तरह के हथकंडे अपनाए गए हैं, और इनके पीछे किन-किन देशों का हाथ है, यह भी कोई ढकी-छिपी बात नहीं है, खासकर जम्मू-कश्मीर में लोगों को भड़काने के लिए पाकिस्तानी मीडिया के एक धड़े और देश प्रायोजित स्वतंत्र संस्थाएं दशकों से यह काम करती रही हैं। समय-समय पर भारत सरकार ने घाटी में उनके प्रसारण को रोकने के कदम भी उठाए हैं, लेकिन यह दुष्प्रवृत्ति अब हमारे भूगोल के किसी एक हिस्से तक सीमित नहीं है, उनके निशाने पर हमारा पूरा सामाजिक ताना-बाना और भारत राष्ट्र की शांति-व्यवस्था है। इसलिए कभी ये अल्पसंख्यक समुदायों को लक्षित करके, तो कभी भारतीय सेना के बारे में फर्जी तस्वीरों, वीडियो फुटेज व सामग्रियां प्रसारित करते रहे हैं, ताकि लोगों को गुमराह किया जा सके। निस्संदेह, सच्चाई को निरूपित करने वाली सूचनाएं भी सोशल मीडिया में उतनी ही तेजी से सामने आती हैं, मगर जरूरी नहीं कि दुष्प्रचार की गिरफ्त में आ चुके सभी लोगों तक वे पहुंच ही जाएं या वे मानसिक-बौद्धिक रूप से इतने परिपक्व हों कि सच-झूठ में फर्क कर सकें! ऐसे में, मुफीद रास्ता यही है कि इन जहरीले स्रोतों पर ही वार किया जाए। दुनिया काफी समय से दहशतगर्दों द्वारा सोशल मीडिया के इस्तेमाल से वाकिफ है। चुनौती अब यह है कि इंटरनेट के विस्तार ने इसे गंभीर रूप देना शुरू कर दिया है। साइबर दुनिया बेहद अराजक है और संसार भर की सरकारें इससे परेशान हैं। सोशल मीडिया कंपनियों के आर्थिक स्वार्थ ने भी राष्ट्र-समाज विरोधी तत्वों का काम आसान किया है। ऐसे में, सरकार को न सिर्फ निगरानी तंत्र को चाक-चौबंद करने, बल्कि बेहद पेशेवर तरीके से इस काम को अंजाम देने की जरूरत है। इन मंचों ने अभिव्यक्ति की आजादी को काफी मजबूत आधार दिया है। इसलिए निगरानी करते हुए नागरिक स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक मूल्यों का भी ख्याल रखना होगा। यही नहीं, देश के भीतर से भी सांप्रदायिक-जातीय वैमनस्य पैदा कर रहे लोगों-संगठनों के खिलाफ कदम उठाए जाने चाहिए। समय आ गया है कि साइबर सेल को शक्तिशाली बनाया जाए। इससे संबंधित कानून इतने सख्त हों कि इन माध्यमों का सांगठनिक रूप से या निजी तौर पर भी दुरुपयोग करने की हिमाकत कोई न करे।

महाबोधि धमाके: दोषियों को उम्रकैद नहीं, फांसी दो

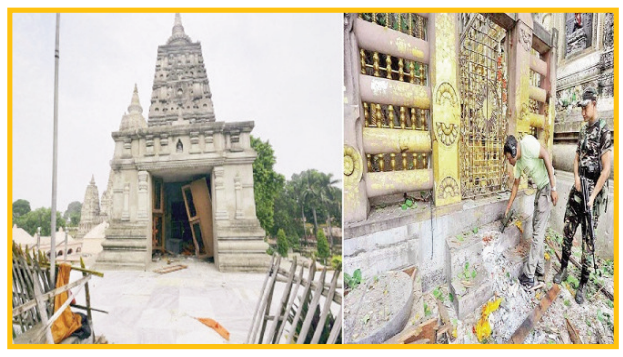

– आर.के. सिन्हा

कुछ इंसानों के राक्षसी या वहशी प्रवृति होने का ही नतीजा था बोधगया में बम विस्फोट। बोधगया में बोधि वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई और वे बुद्ध बने। इसी बोधगया में कुछ आतंकियों ने बम विस्फोट की घटना को अंजाम दिया। दरअसल 19 जनवरी, 2018 को बिहार के बौद्ध तीर्थ स्थल बोधगया में तिब्बती बौद्ध धर्मगुरू दलाई लामा के धर्मोपदेश के कुछ घंटों बाद ही बोधगया मंदिर परिसर में बम विस्फोट हुआ था। इस विस्फोट के लिए जिम्मेदार आतंकियों को अंततः पकड़ लिया गया। अब राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) की विशेष अदालत ने तीन दोषियों को उम्रकैद और पांच अन्य को दस वर्ष के कारावास की सजा सुनाई है। इन सबका संबंध जमात-उल-मुजाहिदीन बांग्लादेश (जेएमबी) नामक संगठन से था। यदि इन सबको फांसी की सजा दी गई होती तो एक बेहतर संदेश जाता कि भारत अब आतंकवाद को सख्ती से कुचल कर रख देगा। आतंकियों को भारत किसी भी तरह की रियायत नहीं देगा। भारत को अपनी एक सख्त छवि दुनिया के सामने लानी ही होगी। ऐसी सख्त छवि जो दुनिया को यह संदेश देता है कि भारत अपने दुश्मनों को कुचल कर रख देगा। जरा सोच लें कि महाबोधि मंदिर में धमाका करने वाले लोग कितने जहरीले होंगे? इनकी हरकत से जहां बुद्ध के अनुयायियों को खासतौर गहरा सदमा लगा, वहीं देश के पर्यटन उद्योग पर बेहद नकारात्मक असर हुआ था। जिन स्थानों पर आतंकी हमले की आशंका होती है या जहां आतंकी अपना काम कर चुके होते हैं, वहां जाने से पर्यटक तो बचते ही हैं। इस विस्फोट का वास्तविक लक्ष्य दलाई लामा को नुकसान पहुंचाना ही था। इंसान कल्पना मात्र से सिहर जाता है कि अगर दलाई लामा को कुछ हो जाता तो क्या होता? वर्तमान में दलाई लामा से बड़ी और आदरणीय शख्सियत दुनिया भर में नहीं है। सारा संसार उनका सम्मान करता है। वे शांति और सौहार्द का संदेश देते हैं। जाहिर है, इस तरह के पवित्र इंसान को हानि पहुंचाने की चाहत रखने वाला शख्स राक्षस ही तो होगा। बोधगया में तलाशी के दौरान पुलिस ने घटनास्थल से तार, घड़ी, बैटरी, डेटोनेटर, सफेद पाउडर बरामद किये थे। इस मामले को बाद में एनआईए को सौंप दिया गया था। एनआईए ने तीन फरवरी, 2018 को मामला दर्ज कर अभियुक्तों को गिरफ्तार किया। इन अभियुक्तों की कोलकाता एवं बेंगलुरु में हुए बम विस्फोट में भी संलिप्तता थी। उम्रकैद की सजा पाने वालों में तीन दोषी अहमद अली, पैगंबर शेख और नूर आलम हैं। महाबोधि मंदिर में धमाका तब हुआ था जब केंद्र और बिहार की सरकार दुनियाभर में फैले 50 करोड़ से ज्यादा बौद्ध धर्म के अनुयायियों को भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थलों तक लाने की कोशिशें कर रही थीं। विस्फोट के बाद बौद्ध धर्म के अनुयायियों की महाबोधि मंदिर में आने की संख्या तेजी से घट गई। इनका भगवान बौद्ध की जन्मस्थली भारत को लेकर आकर्षण स्वाभाविक है। इसी के चलते बौद्ध धर्म के मानने वाले भारत की यात्रा करते हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया, श्रीलंका, जापान और चीन तक से पर्यटक यहां पहुंचते हैं। यूं तो ये साल भर आते ही रहते हैं, पर अक्टूबर से मार्च तक उनकी संख्या सबसे अधिक रहती है।

महाबोधि मंदिर में धमाका करने वाले अब जेल की चक्की पीसेंगे पर इस हमले से सुरक्षा एजेंसियों के कामकाज पर भी सवाल खड़ा होता है। वे अगर महाबोधि मंदिर को भी इंसानियत के दुश्मनों से सुरक्षित नहीं रख पाए तो फिर क्या बचा। यहीं 7 जुलाई 2013 को भी सीरियल धमाके हुए थे। उन सीरियल धमाकों को इंडियन मुजाहिद्दीन ने अंजाम दिया था। 2013 में हुए धमाकों के बाद लगता था कि अब महाबोधि मंदिर को सुरक्षा एजेंसियां सुरक्षित कर लेंगी। पर यह नहीं हुआ। यह एक गंभीर मामला है। देखिए एक धर्म विशेष से जुड़े आतंकी किसी भी हालत में अन्य मजहबों से जुड़े धार्मिक स्थलों को बर्दाश्त नहीं करते हैं। इन्हें अपने से इतर दूसरे धर्मों से नफरत है। यही इन्हें बचपन से घुट्टी पिलाई गई है। इनका सर्वधर्म समभाव में कतई यकीन नहीं है। सर्वधर्म समभाव हिंदू धर्म की एक प्राचीन अवधारणा है जिसके अनुसार सभी धर्मों द्वारा अनुसरण किए जाने वाले मार्ग भले ही अलग हो सकते हैं, किंतु उनका गंतव्य एक ही है। इस अवधारणा को रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद के अतिरिक्त महात्मा गांधी ने भी अपनाया था। हालांकि माना जाता है कि इस विचार का उद्गम तो वेदों में है। इसे आगे बढ़ाया गांधीजी ने। उन्होंने इसका उपयोग पहली बार सितंबर 1930 में हिन्दुओं और मुसलमानों में एकता जगाने के लिए किया था, ताकि वे मिलकर ब्रिटिश राज का अंत कर सकें। उन्होंने ही अपनी प्रार्थना सभाओं में सब धर्मों के विचार शामिल करने की शुरूआत की थी। यह भारतीय पंथ निरपेक्षता के प्रमुख सिद्धांतों में से एक है, जिसमें धर्म को सरकार एक-दूसरे से पूरी तरह अलग न करके सभी धर्मों को समान रूप से महत्व देने का प्रयास किया जाता है। इस बीच, महाबोधि मंदिर में धमाकों के दोषियों को सजा के बाद भी सेक्युलरवादी और मुस्लिम बुद्धिजीवी एकदम से चुप हैं। पूर्व केन्द्रीय मंत्री सलमान खुर्शीद की भी जुबान सिल गई है। वे कुछ दिन पहले तक हिन्दुत्व की तुलना आतंकवादी संगठन आईएसआईएस व बोको हरम से कर रहे थे। अब वे जरा बता दें कि महाबोधि मंदिर में धमाका करने वाले इनमें से कौन से मुसलमान हैं। जाहिर है, वे नहीं बोलेंगे। उनका जमीर मर जो चुका है। अब हर्ष मंदर और अशोक वाजपेयी जैसे कथित बुद्धिजीवी भी दायें-बायें निकल लेंगे। वे भी नहीं बोलेंगे। आजकल हिन्दू और हिन्दुत्व पर देश में अधकचरा ज्ञान बांटने वाले राहुल गांधी भी कुछ नहीं कहेंगे। वे महाबोधि मंदिर में हमला करने वालों के खिलाफ एक शब्द भी बोलने से बचेंगे। बोलने पर उनकी धर्मनिरपेक्षता पर कुठाराघात जो हो जायेगा? खैर, अब हमें एकबार फिर से दुनिया भर के बौद्ध धर्म मानने वाले पर्यटकों को अपने देश में लाना होगा। उन्हें भरोसा दिलाना होगा कि भारत के सभी तीर्थ स्थल पूरी तरह से सुरक्षित हैं। कुछ समय पहले मैं सारनाथ की यात्रा पर था। वहां मुझे भारतीयों के साथ-साथ जापान, श्रीलंका और थाईलैंड के पर्यटक मिले। वे बता रहे थे कि जैसे ही विदेशी उड़ानें फिर से शुरू होंगी, भारत में फिर से बड़ी संख्या में बौद्ध पर्यटक आने लगेंगे। हमें उनका स्वागत करते हुए अपने देश के भीतर पल रहे आस्तीन के सांपों को तो मारना ही होगा।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं।)

फैसले पर न्यायिक व्यवस्था का इंतजार

अनूप भटनागर

अभी तक यही सुनते और पढ़ते आ रहे हैं कि अलग रह रही पत्नी या विवाह विच्छेद होने की स्थिति में ऐसी स्त्री और ऐसे दंपति की संतान दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 के तहत भरण-पोषण की हकदार है। यही नहीं, संतान की उपेक्षा का शिकार हो रहे माता-पिता भी इस कानून के तहत भरण-पोषण के हकदार हैं। लेकिन, क्या पति के साथ एक ही छत के नीचे रहने वाली पत्नी भी धारा 125 के तहत भरण-पोषण भत्ते का दावा कर सकती है? सुनने और पढ़ने में यह थोड़ा अजीब लगे लेकिन यह सवाल इस समय न्यायालय के विचाराधीन है। दिल्ली की एक कुटुम्ब अदालत ने पति के साथ ही उसके घर में रहने वाली पत्नी की याचिका पर उसे गुजारा भत्ता देने का आदेश पति को दिया है। इस आदेश के परिप्रेक्ष्य में न्यायपालिका के समक्ष एक सवाल आया है कि क्या पति के साथ ही घर में रहने वाली पत्नी धारा 125 के तहत भरण-पोषण भत्ते का दावा कर सकती है। दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 का संबंध पत्नी, संतान और माता-पिता के भरण-पोषण से संबंधित है। इसके अंतर्गत कोई भी स्त्री पति की उपेक्षा या पति से अलग रहने की स्थिति में गुजारा भत्ते की हकदार होती है। यह प्रावधान ऐसे व्यक्ति की संतानों और माता-पिता के मामले में भी लागू होता है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने सेवानिवृत्त पति की याचिका पर अब पत्नी से जवाब मांगा है। पति ने सवाल उठाया है कि क्या अपने पति के साथ उसके ही घर में रहने वाली पत्नी धारा 125 के तहत गुजारा भत्ते की हकदार है। इस मामले में 10 फरवरी को आगे सुनवाई होगी। लेकिन पिछली तारीख पर सुनवाई के दौरान न्यायालय ने टिप्पणी की थी कि अगर पत्नी अनपढ़ हो या उसे एक ही घर में उपेक्षित छोड़ दिया जाए तो ऐसी स्थिति में पत्नी को गुजारा भत्ता देना पड़ता है। सामान्यतया, पति द्वारा पत्नी का परित्याग करने, उसके साथ क्रूरता का व्यवहार कर उसे अलग रहने के लिए मजबूर करने या पति द्वारा दूसरी शादी कर लेने या पति का किसी अन्य महिला के साथ रहने, पति के किसी संक्रामक रोग से ग्रसित होने या पति द्वारा धर्म परिवर्तन कर लेने की वजह से पत्नी का उससे अलग रहना और विवाह विच्छेद जैसी परिस्थितियों में पत्नी दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 के तहत गुजारा भत्ते के लिए अदालत का दरवाजा खटखटा सकती है। लेकिन पेश मामले में पति-पत्नी एक ही घर में साथ-साथ रहते हैं। पति का दावा है कि वह अपनी पत्नी की सारी जरूरतों को पूरा करता है लेकिन इसके बावजूद गुजारा भत्ता के माध्यम से पत्नी रहन-सहन की दोहरी राहत चाहती है। याचिकाकर्ता पति दिल्ली परिवहन निगम का सेवानिवृत्त विदुर कर्मचारी है और उसने तलाकशुदा महिला से दूसरी शादी की थी। इस व्यक्ति को सेवानिवृत्ति के बाद करीब तीस हजार रुपए पेंशन मिल रही है। याचिकाकर्ता पति का दावा है कि उसने सेवानिवृत्ति पर मिली ग्रेच्युटी की राशि में से 2018 में एकमुश्त पांच लाख रुपए अपनी पत्नी को दिए थे जो उसने एक साल के भीतर ही खर्च कर दिए। इसके बाद भी पत्नी की और पैसों की मांग का सिलसिला जारी रहा। इनकार करने पर उसने कथित रूप से इसके गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी। इसके बाद ही पत्नी ने भरण-पोषण की मांग करते हुए कुटुम्ब अदालत में मामला दाखिल तीस हजार रुपए बतौर गुजारा भत्ता दिलाने का अनुरोध किया था। चूंकि कुटुम्ब अदालत दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 के तहत गुजारा भत्ते के लिए मुख्य मामला लंबित रहने के दौरान पत्नी, अवयस्क संतान, अविवाहित पुत्री और माता या पिता, जैसा प्रकरण हो, अंतरिम गुजारा भत्ता देने का आदेश दे सकती है, इसलिए अदालत ने पत्नी को भरण-पोषण के लिए हर महीने दस हजार रुपए महीने देने का अंतरिम आदेश दे दिया। याचिकाकर्ता का तर्क है कि कुटुम्ब अदालत ने धारा 125 के तहत अंतरिम गुजारा भत्ते का आदेश देते समय कुछ मूलभूत बिन्दुओं की अनदेखी की है। इस सेवानिवृत्त कर्मचारी की दलील है कि कुटुम्ब अदालत ने पति और पत्नी के अलग रहने की अनिवार्यता संबंधी व्यवस्थाओं को नजरअंदाज कर दिया। यही नहीं, पेश मामले में पति द्वारा पत्नी की उपेक्षा करने या उसकी देखरेख करने से इनकार करने जैसा कोई साक्ष्य भी अदालत के समक्ष नहीं था। दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 के तहत पत्नी, अवयस्क संतान और माता-पिता को गुजारा भत्ता देने के मामले में अनेक फैसले हैं। न्यायालय ने पति के बेरोजगार होने और आय का पर्याप्त साधन नहीं होने की वजह से पत्नी और संतान को गुजारा भत्ता देने में असमर्थता को वैध आधार नहीं माना है। गुजारा भत्ता की पात्रता के सवाल पर पत्नी के शिक्षित या मॉडलिंग के कारण होने वाली आमदनी जैसी दलीलों पर भी अपनी सुविचारित व्यवस्थाएं हैं। लेकिन जहां तक पत्नी की पर्याप्त आमदनी का मुद्दा है तो पति को ही यह साबित करना होगा कि उससे अलग रहने वाली उसकी पत्नी खुद अपना जीवन निर्वहन करने में आर्थिक रूप से सक्षम है। यही नहीं, धारा 125 के तहत न्यायालय ने उन परिस्थितियों की भी व्याख्या, जिनमें पति से अलग रहने वाली या विवाह विच्छेद की स्थिति अथवा पत्नी के दूसरी शादी करने से उत्पन्न स्थिति में गुजारा भत्ते के सवाल पर भी फैसले दिए हैं। लेकिन यह संभवतः पहला मामला है, जिसमें एक ही छत के नीचे रहने वाले पति-पत्नी के बीच गुजारा भत्ते का सवाल उठा है और अब इस पर न्यायिक व्यवस्था का इंतजार है।

आज के कार्टून

बुरी आदत

श्रीराम शर्मा आचार्य

एक अमीर आदमी अपने बेटे की किसी बुरी आदत से बहुत परेशान था। वह जब भी बेटे से आदत छोड़ने को कहते तो उसका एक ही जवाब मिलता, 'अभी मैं इतना छोटा हूं। धीरे-धीरे ये आदत छोड़ दूंगा!' मगर वह कभी भी आदत छोड़ने का प्रयास नहीं करता। इस वजह से घरवाले काफी चिंतित रहने लगे। उन्हीं दिनों एक महात्मा गांव में पधारे हुए थे, जब आदमी को उनकी ख्याति के बारे में पता चला तो वह तुरंत उनके पास पहुंचा और अपने बेटे की बुरी आदत के बारे में उन्हें बताने लगा। महात्मा जी ने उसकी बात सुनी और कहा, 'ठीक है, आप अपने बेटे को कल सुबह बागीचे में लेकर आइये, वहीं मैं आपको उपाय बताऊंगा।' अगले दिन सुबह पिता-पुत्र बागीचे में पहुंचे। महात्मा जी बेटे से बोले, 'आइये हम दोनों बागीचे की सैर करते हैं।' और वो धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। चलते-चलते ही महात्मा जी अचानक रु के और बेटे से कहा, 'क्या तुम इस छोटे से पौधे को उखाड़ सकते हो?' 'जी हां, इसमें कौन सी बड़ी बात है।' और ऐसा कहते हुए बेटे ने आसानी से पौधे को उखाड़ दिया। फिर वे आगे बढ़ गए और थोड़ी देर बाद महात्मा जी ने थोड़े बड़े पौधे की तरफ इशारा करते हुए कहा, 'क्या तुम इसे भी उखाड़ सकते हो?' बेटे को तो मानो इन सब में कितना मजा आ रहा हो, वह तुरंत पौधा उखाड़ने में लग गया। इस बार उसे थोड़ी मेहनत लगी पर काफी प्रयत्न के बाद उसने इसे भी उखाड़ दिया। वे फिर आगे बढ़ गए और कुछ देर बाद पुनः महात्मा जी ने एक गुड़हल के पेड़ की तरफ इशारा करते हुए बेटे से इसे उखाड़ने के लिए कहा। बेटे ने पेड़ का ताना पकड़ा और उसे जोर-जोर से खींचने लगा। पर पेड़ तो हिलने का भी नाम नहीं ले रहा था। जब बहुत प्रयास करने के बाद भी पेड़ टस-से-मस नहीं हुआ तो बेटा बोला, 'अरे! ये तो बहुत मजबूत है इसे उखाड़ना असंभव है।' महात्मा जी ने उसे प्यार से समझाते हुए कहा, 'बेटा, ठीक ऐसा ही बुरी आदतों के साथ होता है। जब वे नई होती हैं तो उन्हें छोड़ना आसान होता है, पर वे जैसे-जैसे पुरानी होती जाती हैं, इन्हें छोड़ना मुशिकल होता जाता है।' बेटा उनकी बात समझ गया और उसने मन-ही-मन आज से ही बुरी आदतें छोड़ने का निश्चय किया।

सू-दोकू नवताल -1997

2	9		3	1			8	
3	6		2		7		9	
		7			6		2	1
	7		1					
1	3			4			7	2
					5		4	
6	2		4			9		
	5		6		9		1	8
	1			5	3		6	4

सू-दोकू -1996 का हल

7	6	2	4	5	9	1	3	8
4	1	8	7	3	6	9	5	2
9	5	3	8	1	2	7	6	4
8	7	9	2	4	5	6	1	3
3	2	6	1	7	8	5	4	9
5	4	1	6	9	3	8	2	7
6	3	4	9	8	1	2	7	5
2	9	7	5	6	4	3	8	1
1	8	5	3	2	7	4	9	6

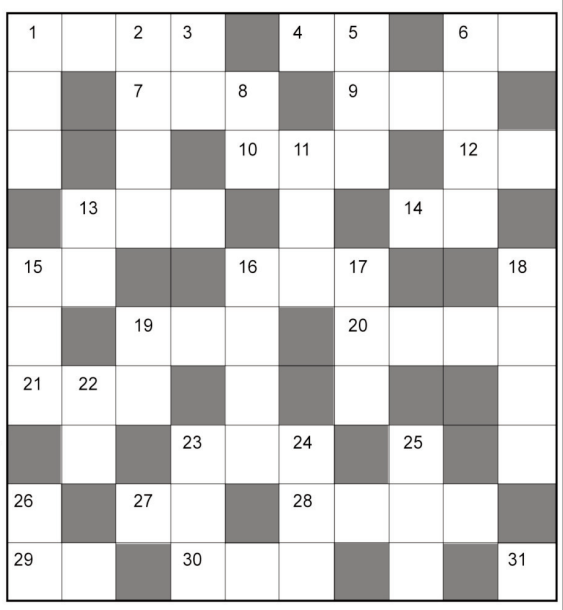

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3 x 3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।

फिल्म वर्ग पहेली-1997

बायें से दायें:-

1. ऋषि कपूर, मनीषा कोइराला की 'दिल की लगी कही ना जाए' गीत वाली फिल्म-4
4. ऋतिक रोशन, करिश्मा कपूर की फिल्म-2
6. 'सुबह सुबह जब खिड़की खोले' गीत वाली फिल्म-2
7. 'तेरी गलियों में ना रखेंगे कदम' गीत वाली फिल्म-3
9. प्रसिद्ध फिल्म 'मदर इंडिया' में शीर्षक भूमिका किस अभिनेत्री ने की थी-3
10. फिल्म 'रणभूमि' में ऋषि कपूर की नायिका-2
12. ऋषि कपूर और डिम्पल की फिल्म-2
13. गुलजार की फिल्म 'परिचय' में जया भादुड़ी के साथ नायक-3
14. प्रशांत और ऐश्वर्या की फिल्म-2
15. 'बाबा मेरी ये जवानी' गीतवाली फिल्म-2
16. जैकी श्रॉफ जूही, अमृता सिंह की फिल्म-3
19. राजकपूर, नर्गिस की फिल्म-3
20. 'दुनिया का मेला, मेले में लड़की' गीत वाली हेमा मालिनी की फिल्म-2,2
21. फिल्म 'रिफ्यूजी' में अभिषेक की नायिका-3
23. अमिताभ बच्चन, मौसमी चटर्जी अभिनीत फिल्म-3
27. मिथुन, पद्मिनी की फिल्म-2
28. शत्रुघ्न, मिथुन, हेमा, अनीता राज की फिल्म-4
29. देव आनंद, माला सिन्हा की फिल्म-2
30. अविनाश वधावन, आयशा जुल्का की फिल्म-3
31. 'चंदा ने दी चांदनी' गीत वाली जीतेंद्र, जया प्रदा की फिल्म-1

ऊपर से नीचे:-

1. जीतेंद्र, राज बब्बर, रीना राय परवीन बाबी अभिनीत फिल्म-3
2. 'हम को हमीं से चुरालो' गीतवाली फिल्म-4
3. सलमान खान, रेवती अभिनीत फिल्म-2
5. 'दिल क्यों धड़कता है' गीत वाली फिल्म-3
6. शाहरुख खान, जूही चावला की फिल्म-2,2
8. फिल्म 'सवेरे वाली गाड़ी' में पूनम ढिल्लो के साथ नायक-2
11. 'मेरा नाम बिल्लू-बिल्लू' गीतवाली फिल्म-3
13. सलमान, सनी, करिश्मा,तब्बू की फिल्म-2
15. सनी देओल, मीनाक्षी, ममता अभिनीत फिल्म-3
16. 'मेरे सपनों की रानी कब आएगी तू' गीत वाली राजेश खन्ना, शर्मिला की फिल्म-4
17. 'तेरे बिन में कुछ नहीं' गीत वाली फिल्म-3
18. देव आनंद, नूतन अभिनीत फिल्म-4
19. फिल्म 'कभी हां कभी ना' में नायिका सुचित्रा कृष्णमूर्ति के किरदार का नाम-2
22. फिल्म 'प्यासा सावन' में जीतेंद्र के साथ नायिका कौन थी-2
23. सनी देओल, अमृता सिंह अभिनीत फिल्म-3
24. फिल्म 'परदेस' की नायिका कौन थी-3
25. 'रुके-रुके से कदम रुक के बार बार चले' गीत वाली संजीव कुमार, शर्मिला टैगोर अभिनीत फिल्म-3
26. 'ऐसी रंग दे पिया' गीत वाली फिल्म 'बाबू' में राजेश खन्ना के साथ नायिका कौन थी-2

फिल्म वर्ग पहेली- 1996

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

वैक्सीन की दोनों डोज ले चुके लोगों को गो वैक्सी फेयर का ऑफर दे रही गो फर्स्ट

नई दिल्ली । भारत में कोरोना वैक्सीनेशन का काम तेजी से हो रहा है।अभी तक वैक्सीन की 100 करोड़ से ज्यादा डोज दी जा चुकी हैं।वहीं अगर आप भी कोरोना वैक्सीन की दोनों डोज ले चुके हैं, तब अब आप 20 फीसदी डिस्काउंट के साथ हवाई सफर कर सकते हैं।दरअसल,बजट एयरलाइन गो फर्स्ट ने हवाई यात्रियों के लिए शानदार ऑफर पेश किया है। कंपनी ने वैक्सीन के दोनों डोज लगा चुके यात्रियों के लिए हवाई टिकट पर 20 फीसदी की छूट देने की घोषणा की है।'गो वैक्सी फेयर' ऑफर के तहत वैक्सीन लगवा चुके यात्रियों को यह डिस्काउंट बेस फेयर पर दिया जा रहा है। इस ऑफर के लिए कंपनी ने गोवैक प्रोमो कोड जारी किया है। कंपनी की डोमेस्टिक फ्लाइट्स में यात्रा करने वाले लोग अब गोवैक कोड का उपयोग करके डिस्काउंट का फायदा उठा सकते हैं। गो फर्स्ट ने कहा कि यह ऑफर केवल कंपनी की वेबसाइट या मोबाइल एप पर ही वैलिड है। 20 फीसदी तक का डिस्काउंट केवल डोमेस्टिक फ्लाइट्स की टिकट बुक करने पर ही मिलेगा। इसके अलावा जिस तारीख को आप टिकट बुक करने वाले हैं, उसके 15 दिनों तक की आप डबल वैक्सीनेशन डिस्काउंट पा सकते हैं, इसके बाद वहां वैलिड नहीं रहेगा। कंपनी की तरफ से दी गई जानकारी के मुताबिक, डबल वैक्सीनेशन डिस्काउंट बुकिंग की तारीख से 15 दिन बाद सफर करने के लिए लागू है, इसके बाद वहां वैध नहीं रहेगा।

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया और यू ग्रो के बीच समझौता

बेंगलुरु । सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को कर्ज देने वाले वित्तीय एवं प्रौद्योगिकी मंच यू ग्रो कैपिटल ने कहा कि उसने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के साथ ऋण मुहैया कराने के लिए एक समझौता किया है। एक बयान में बताया गया कि उनकी अगले 12 महीने में एमएसएमई क्षेत्र की इकाईयों के बीच 1,000 करोड़ रुपए के ऋण वितरण की योजना है। यह ऋण यू ग्रो कैपिटल के प्रथम, संजीवनी, साथी, ग्रो एमएसएमई और मशीनरी फाइनेंसिंग जैसे कार्यक्रमों के तहत एमएसएमई क्षेत्र की विभिन्न इकाईयों को दिया जाएगा। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के कार्यकारी निदेशक राजीव पुरी ने कहा कि इस समझौते से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को किफायती दरों पर ऋण उपलब्ध करवाया जा सकेगा। यू ग्रो कैपिटल के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा कि यह पहली बार है जब इस मंच ने अपने सभी कार्यक्रमों के लिए सह-ऋण प्रदाता समझौता किया है।

एपल संयंत्र इस सप्ताह बंद रहेगा

चेन्नई । एपल सप्लायर फॉक्सकॉन फूड पॉइजनिंग की घटना के विरोध के बाद चेन्नई के पास का संयंत्र इस सप्ताह बंद रहेगा। जानकारी के मुताबिक संयंत्र में 5 दिनों की छुट्टी घोषित की गई है। तमिलनाडु के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने भी इसकी पुष्टि की। हालांकि फॉक्सकॉन और एपल के तरफ से अभी तक कोई बयान नहीं आया है। फॉक्सकॉन प्लांट में पिछले हफ्ते फूड पॉइजनिंग की घटना के बाद 150 कर्मचारियों को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। फॉक्सकॉन की फैक्टरी है जहां आईफोन 12 मॉडल बनाया जाता है। एपल ने हाल ही में कारखाने में अपने प्रमुख आईफोन 13 के भी प्रोडक्शन की टेस्टिंग शुरू की थी। कंपनी ने फरवरी तक डोमेस्टिक और एक्सपोर्ट दोनों के लिए भारत में इस मॉडल का कॉमर्शियल प्रोडक्शन शुरू करने की उम्मीद है।

शेयर बाजार उछाल के साथ बंद

मुंबई (एजेंसी) । मुम्बई शेयर बाजार बुधवार को बढ़त के साथ बंद हुआ। बाजार में यह तेजी अंतरराष्ट्रीय बाजारों से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही दिग्गज कंपनियों रिलायंस इंड्स्ट्रीज, आईसीआईसीआई बैंक और एच एंड टी के शेयरों के कारण आयी है। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 611.55 अंक करीब 1.09 फीसदी की बढ़त के साथ ही 56,930.56 अंक पर बंद हुआ। वहीं इसी प्रकार पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 184.60 अंक तकरीबन 1.10 फीसदी की बढ़त के साथ ही 16,955.45 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स के शेयरों में सबसे ज्यादा करीब तीन फीसदी की बढ़त बजाज फाइनेंस के शेयरों में रही। इसके अलावा भारती एयरटेल, सन फार्मा, रिलायंस इंड्स्ट्रीज और एसबीआई के शेयर भी ऊपर आये हैं। वहीं दूसरी ओर विप्रो, आईटीसी और नेस्ले इंडिया के शेयर गिरे हैं। जानकारों के अनुसार वैश्विक बाजारों में सकारात्मक रुख के साथ ही घरेलू बाजार ऊपर आये हैं। इससे सभी ओर तेजी का माहौल रहा। वहीं मध्यम और छोटी कंपनियों के शेयरों में उछाल आया है। शेयरों के भाव में कमी से निवेशकों ने जमकर खरीददारी की है जिससे बाजार उछला है। इससे पहले गत दिवस भी बाजार बढ़त के साथ बंद हुआ था और यह धारणा आज सुबह से बाजार में कायम रही।

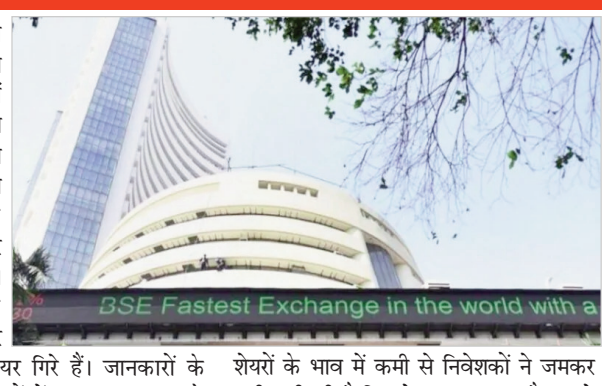

एयर इंडिया ने 43.85 करोड़ का जुर्माना भरा: कैग

नई दिल्ली । नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) ने कहा है कि एयर इंडिया को अनुबंध की शर्तों का पालन नहीं करने पर विमान निर्माता कंपनी बोइंग को 43.85 करोड़ रुपए का जुर्माना देना पड़ा जबकि इससे बचा जा सकता था। कैग की संसद में पेश रिपोर्ट के मुताबिक एयर इंडिया ने जुर्माने की इस रकम का भुगतान अगस्त 2020 में किया था। जुलाई 2016 से लेकर दिसंबर 2019 के दौरान अनुबंध शर्तों का पालन नहीं करने पर एयर इंडिया को यह जुर्माना देना पड़ा। कैग ने कहा है कि एयर इंडिया को यह जुर्माना विमानों से हटाए गए उपकरणों को लौटाने में हुई देरी के कारण देना पड़ा जबकि इससे बचा जा सकता था। एयर इंडिया ने दिसंबर 2015 में बोइंग के साथ एक करार किया था जिसमें 787 विमान कलपुर्जों की सर्विसिंग का प्रावधान था। इसके तहत एयर इंडिया को विमानों से निकाले गए कलपुर्जे बोइंग को नए पुर्जों की आपूर्ति के 10 दिनों के भीतर वापस करने थे। ऐसा नहीं करने पर उसे बोइंग को जुर्माना देना पड़ता। कैग के मुताबिक एयर इंडिया जुलाई 2016 से लेकर दिसंबर 2019 के दौरान करीब 170 मौकों पर पुराने कलपुर्जे निर्धारित समय के भीतर नहीं लौटा पाई जिसकी वजह से उसे बोइंग को यह जुर्माना देना पड़ा था।

जियो ने एयरटेल और वोडाफोन-आइडिया को दिया झटका, जोड़े 17.6 लाख ग्राहक

मुंबई (एजेंसी)। देश की दिग्गज टेलीकॉम कंपनी जियो को अक्टूबर में बहुत फायदा हुआ है। कंपनी के साथ 17.6 लाख ग्राहक जुड़े हैं। जबकि एयरटेल और वोडाफोन आइडिया को भारी नुकसान हुआ है, क्योंकि कुल मिलाकर 14.3 लाख यूजर्स ने दोनों कंपनियों को छोड़ा है।ये आंकड़े भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) की तरफ से जारी हुए हैं। ट्राई की रिपोर्ट के मुताबिक,4.89 लाख यूजर्स ने एयरटेल का साथ छोड़ा है।जबकि वोडाफोन आइडिया को 9.64 लाख यूजर्स का नुकसान हुआ है। अब एयरटेल के यूजर्स की संख्या 35.39 करोड़ रह गई है। बता दें कि कंपनी के साथ सितंबर में 2.74 लाख यूजर्स जुड़े थे। ट्राई के अनुसार,यूजर्स संख्या में वृद्धि के बाद जियो का यूजर बेस 42.65 करोड़ हो चुका है। सितंबर में ये आंकड़ा 1.90 करोड़ था।वहीं दूसरी तरफ वोडाफोन आइडिया का यूजर बेस 26.90 करोड़ हो गया है। सितंबर में इसकी संख्या 10.77 लाख था। ट्राई का कहना है कि भारत में अक्टूबर के अंत में कुल 118.96 करोड़ यूजर्स का इजाफा हुआ है। शहर के यूजर्स की संख्या 65.88 करोड़ और ग्रामीण यूजर्स की संख्या 65.88 करोड़ है। वायरलैस सेगमेंट के मामले में बीएसएनएल और एमटीएनएल ने जियो को पछाड़ा था। बीएसएनएल और एमटीएनएल की बाजार में हिस्सेदारी 9.91 प्रतिशत है, जबकि जियो की टेलीकॉम बाजार में हिस्सेदारी 90.09 प्रतिशत है। वहीं, एयरटेल की हिस्सेदारी 29.83 प्रतिशत और वोडाफोन आइडिया की हिस्सेदारी 22.91 प्रतिशत है।

देश में रत्न, आभूषणों का निर्यात नवंबर में 4.21 प्रतिशत घटकर 17,784.92 करोड़

मुंबई (एजेंसी)। दीपावली के दौरान विनिर्माण गतिविधियों के नरम रहने के कारण देश का रत्न और आभूषणों का निर्यात नवंबर 2021 में 4.21 प्रतिशत घटकर 17,784.92 करोड़ रुपए रहा। रत्न एवं आभूषण निर्यात संवर्द्धन परिषद (जीजेईपीसी) के आंकड़ों के अनुसार नवंबर 2020 में देश का कुल निर्यात 18,565.31 करोड़ रुपए था। दीपावली पर विनिर्माण गतिविधियों में रुकावट के कारण निर्यात में पहले से गिरावट की आशंका थी। जीजेईपीसी के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा' कि वैसे वर्ष 2021 में भारत का रत्न और आभूषण निर्यात का प्रदर्शन पिछले साल की हमारी उम्मीदों से काफी आगे रहा है। विश्व के सबसे बड़े आभूषण उपभोक्ता देश अमेरिका ने इस साल भारत से खरीदारी बढ़ा दी है। हमें इस वित्त वर्ष में 41.65 अरब डॉलर का निर्यात लक्ष्य हासिल करने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि जीजेईपीसी ने सरकार को 2022-23 के केंद्रीय बजट में विचार करने के लिए कुछ नीतिगत सुधारों की सिफारिश की है। इसमें कटे और पॉलिश किए गए हीरे, सोना और अन्य कीमती धातुओं पर आयात शुल्क में कमी समेत मुंबई तथा सूरत के विशेष अधिसूचित क्षेत्रों में कच्चे हीरों की बिक्री की अनुमति देने के लिए कराधान प्रावधानों में संशोधन शामिल है। परिषद के अनुसार तराशे गये और पॉलिश हीरों का कुल निर्यात अक्टूबर में 20.41 प्रतिशत घटकर 9,719.72 करोड़ रुपए रहा, जबकि 2020 के समान महीने में यह 12,212.79 करोड़ रुपए था। वहीं नवंबर में सोने के आभूषणों का कुल निर्यात 38.24 प्रतिशत बढ़कर 5,286.23 करोड़ रुपए पहुंच गया, जो पिछले वर्ष की समान अवधि में 3,823.82 करोड़ रुपए था। इसके अलावा चालू वित्त वर्ष के पहले आठ माह अप्रैल-नवंबर में चांदी के आभूषणों का निर्यात (अस्थायी) 20.47 प्रतिशत बढ़कर 12,552.39 करोड़ रुपए पर पहुंच गया, जो इससे पिछले वर्ष की समान अवधि में 10,419.33 करोड़ रुपए था।

पहली बार रेलवे 26 हजार 338 करोड रुपए के घाटे में

नई दिल्ली (एजेंसी)। केन्द्र सरकार द्वारा मुनाफों के दावों के बावजूद भारतीय रेल घाटे से जूझ रही है। महालेखापरीक्षक (सीएजी) की रिपोर्ट के अनुसार रेलवे को 26 हजार 338 करोड़ रुपए का पिछले एक साल में घाटा हुआ। माना जा रहा है कि रेलवे को इतिहास में पहली बार इतना घाटा हुआ है। रेलवे की माने तो मंत्रालय के अनुसार 1,589 करोड़ रुपए का नेट सरप्लस दिखाया गया था, जोकि सीएजी की रिपोर्ट का अनुसार गलत साबित हुआ है। सीएजी ने मंगलवार को रेलवे वित्त प्रतिवेदन पेश किया था। प्रतिवेदन के तीन अध्यायों में इसे 26,326.39 करोड़ रुपए का घाटा बताया गया है। सामान्य तौर पर इसे ऐसे समझा जा सकता है कि साल 2019-20 में 100 रुपए कमाने के लिए रेलवे ने 114 रुपए के करीब खर्च किए। जबकि रेलवे विभाग की बैलेंस सीट में इस वित्तीय वर्ष में परिचालन अनुपात 98.36 फीसदी अनुमानित बताया गया था। रेलवे ऋण की बात करें तो पहली बार 2019-20 में 25,730.65 करोड़ रुपये के ऋण शेष है। जो वित्तीय वर्ष 2019-20 में 95,217 करोड़ रुपये का पर अनुमानित था। रेलवे की कोयले के परिवहन पर भारी निर्भरता थी जो 2019-20 के दौरान माल ढुलाई आय का लगभग 49 प्रतिशत थी। थोक वस्तुओं की परिवहन पद्धति में किये गए बदलाव ने माल ढुलाई आय को काफी प्रभावित किया। विभिन्न वर्ष 2018-19 में 3,773.86 करोड़ रुपये की तुलना में 2019-20 में 1589.62 करोड़ रुपये का कारोबार रहा है। इसके साथ ही जानकारों का ये कहना है कि रेलवे ने सेवानिवृत्त कर्मियों की पेंशन व अन्य व्यय जोनल रेलवे के कुल व्यय (टोटल एक्सपेंडीचर) के बजाए केवल पेंशन फंड में दर्शाया गया। अगर इस हिसाब से रेलवे पेंशन व अन्य व्यय को कुल व्यय में दर्शाया जाता तो रेलवे की बैलेंस शीट ऐतिहासिक रूप से पहली बार 26,326.39 करोड़ रुपये के घाटे में मानी जाती है।

कुशीनगर-जम्मू के बीच जल्द शुरू होंगी उड़ानें

कुशीनगर (उत्तर प्रदेश) (एजेंसी)। कुशीनगर हवाई अड्डे से जम्मू के लिए उड़ानें जल्द ही शुरू होंगी। ए.के. कुशीनगर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के निदेशक द्विवेदी ने कहा कि 70 सीटों वाले विमान से उड़ान शुरू की जाएगी और बाद में यात्रियों की संख्या बढ़ने पर बोइंग विमान का इस्तेमाल किया जाएगा। नई उड़ान से उत्तर प्रदेश और पश्चिम बिहार के लगभग 20 जिलों को लाभ होगा, क्योंकि सेना में लोगों के अलावा वैष्णो देवी जाने वाले श्रद्धालु भी कम समय में जम्मू पहुंच सकेंगे। द्विवेदी ने कहा, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण और हवाई सेवा प्रदाता कंपनियों के बीच बातचीत अंतिम चरण में है और जम्मू के लिए उड़ान फरवरी में शुरू हो सकती है। इस बीच, कुशीनगर से मुंबई के लिए उड़ान 19 दिसंबर से मौसम की स्थिति और यात्रियों की कम संख्या के कारण स्थगित कर दी गई है। स्पाइस जेट होली के त्योहार के आसपास मुंबई के लिए उड़ानें फिर से शुरू करने की योजना बना रही है। लखनऊ और वाराणसी में दो अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों के बाद राज्य के तीसरे अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे कुशीनगर हवाई अड्डे का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 20 अक्टूबर को किया था।

आयकर गणना में गलती से 12476 करोड़ का नुकसान

कैग ने कहा, गलतियों की संभावना खत्म करे सीबीडीटी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आयकर गणना में गलत आकलन की वजह से आयकर विभाग को 12,476 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ है। नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) ने केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) को ऐसी गलतियों से बचने के लिए फूलप्रूफ आईटी सिस्टम और आंतरिक नियंत्रण तंत्र बनाने का सुझाव दिया है। कैग ने संसद में पेश एक रिपोर्ट में कहा है कि 12,476.53 करोड़ रुपए के 356 बड़े मामलों का ऑडिट करने के बाद पता चला कि इसमें कई तरह की गलतियां हैं। सबसे ज्यादा चूक गणितीय गणना को लेकर हुई है, जिसमें आय और कर, लेवी का ब्याज, कारोबार या पूंजी का नुकसान, मूल्यह्रास, कर छूट व निर्यात में रियायत, कारोबारी खर्च के रूप में गलत अलाउंस, आय का सही आकलन न करने जैसी त्रुटियां हैं। कैग ने बताया कि 356 बड़े मामलों में से अधिकतर में 38 तरह की सामान्य गलतियों की पहचान हुई, जिसमें 3,976.56 करोड़ के मामले शामिल थे। कर व सरचार्ज की गलत गणना, लेवी की गलत ब्याज दर और ज्यादा रिफंड जारी करना आयकर विभाग के आंतरिक नियंत्रण में कमी को दर्शाता है। इसे तत्काल दूर करने की जरूरत है। कैग ने बताया कि वित्त मंत्रालय ने ऑडिट में शामिल मामलों को सुधारने और तत्काल कदम उठाने के निर्देश दिए हैं। हालांकि ध्यान देने वाली बात ये है कि ऑडिट में सिर्फ कुछ ही मामलों को शामिल किया गया है। वास्तव में यह संख्या काफी बड़ी हो सकती है। लिहाजा सीबीडीटी को न सिर्फ अपने आकलन की समीक्षा करनी चाहिए, बल्कि भविष्य में ऐसी गलतियों से बचने के लिए मजबूत आईटी सिस्टम व आंतरिक नियंत्रण ढांचा तैयार करना होगा।

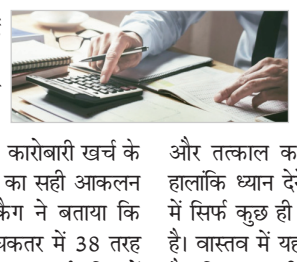

एनटीपीसी ने 2027 तक 35,000 मेगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का लक्ष्य रखा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सार्वजनिक क्षेत्र की प्रमुख बिजली कंपनी एनटीपीसी ने वर्ष 2027 तक 35,000 मेगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता हासिल करने का लक्ष्य रखा है। साथ ही कंपनी 2022-23 में 10 अरब यूनिट हरित ऊर्जा उत्पादित कर सकती है। केंद्रीय बिजली मंत्री आरके सिंह ने राज्यसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में कहा कि अगले वित्त वर्ष 2022-23 में एनटीपीसी द्वारा अपेक्षित हरित ऊर्जा उत्पादन 10 अरब यूनिट है। एनटीपीसी का वर्ष 2027 तक 35,000 मेगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता हासिल करने का लक्ष्य है। एनटीपीसी ने 70 बिजली स्टेशनों के प्रबंधन के अलावा हरित ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में कदम रखा है। एनटीपीसी के पास सौर, पवन और जलविद्युत समेत फिलहाल 2,095.5 मेगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता है। इस साल अप्रैल-नवंबर में कंपनी का नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन 408.96 करोड़ यूनिट रहा।

मंत्री ने सदन को यह भी बताया कि एनटीपीसी की 3,880.5 मेगावाट की निर्माणाधीन हरित ऊर्जा क्षमता है, जिसमें सौर, पवन और जल विद्युत शामिल है।सदन को एक अन्य सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि बिजली क्षेत्र में एफडीआई वर्ष 2021-22 के दौरान अप्रैल-सितंबर में 46 करोड़ 93.1 लाख डॉलर था।

बिजली क्षेत्र में एफडीआई इक्विटी प्रवाह वर्ष 2020-21 में 37 करोड़ 36.3 लाख डॉलर, 2019-20 में 67 करोड़ 21.6 लाख डॉलर और वर्ष 2018-19 में 110 करोड़ 56.4 लाख डॉलर था।

इस साल देश में बढ़ी फ्यूल कार्ड्स की मांग: रिपोर्ट

मुंबई (एजेंसी)। पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी की वजह से देश में फ्यूल कार्ड्स जैसे खास क्रेडिट कार्ड्स की मांग लगभग 10 गुना बढ़ गई है। देश में इस्तेमाल हो रहे कुल क्रेडिट कार्ड में फ्यूल कार्ड्स की हिस्सेदारी बढ़कर 13.1 फीसदी हो गई है, जो बीते साल 4.95 फीसदी थी। अब सारे दफ्तर और स्कूल-कॉलेज खुल गए हैं, लिहाजा निकट भविष्य में भी फ्यूल कार्ड्स की जोरदार डिमांड बनी रहेगी। बैंक बाजार की मनीमूड रिपोर्ट के मुताबिक इस साल क्रेडिट कार्ड्स इस्तेमाल करने वाली महिलाओं की संख्या करीब 50 फीसदी बढ़ी है। देश के कुल क्रेडिट कार्ड यूजर्स में महिलाओं की संख्या 12 फीसदी हो गई, जबकि 2020 में यह आंकड़ा 8.41 फीसदी था। किशोरियां ज्यादा क्रेडिट कार्ड इस्तेमाल कर रही हैं। होम लोन के मामले में भी इस साल बड़ा बदलाव आया है। 2021 की पहली तिमाही में होम लोन का औसत साइज बढ़कर 28.43 लाख रुपए हो गया, जो 2020 की चौथी तिमाही में 27.74 लाख रुपए था। इसके बाद कोविड महामारी की दूसरी लहर के दौरान इस मामले में थोड़ी कमी आई लेकिन साल की तीसरी तिमाही के बाद से रिकवरी शुरू हो गई। अब हालात ऐसे हो गए हैं कि देश में डेढ़ करोड़ रुपए से भी ज्यादा बड़े होम लोन की मांग निकलने लगी है।

एक रिपोर्ट के मुताबिक फाइनेंशियल हैबिट्स के मामले में पुरुषों से महिलाएं ज्यादा सतर्क हैं। इस साल 72 फीसदी महिलाओं का क्रेडिट स्कोर 700 या इससे ज्यादा रहा, जबकि इतना क्रेडिट स्कोर वाले पुरुषों की तादाद 66 फीसदी है। यही नहीं जहां 40 फीसदी महिलाओं का क्रेडिट स्कोर 800 से ऊपर रहा, वहीं इतना स्कोर वाले पुरुष 35.6 फीसदी ही रहे।

महिंद्रा ने सैंगयॉन्ग ईवी बैटरी विकास के लिए चीनी फर्म के साथ की साझेदारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय कार निर्माता महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड की दक्षिण कोरियाई यूनिट सैंगयॉन्ग मोटर कंपनी ने इलेक्ट्रिक वाहन बनाने वाली चीनी कंपनी बीवाईडी ऑटो कंपनी के साथ ईवी बैटरी के विकास के लिए समझौता किया है। कंपनी ने एक बयान में कहा कि सैंगयॉन्ग मोटर ने कार बैटरी विकसित करने और अपने मॉडलों के लिए बैटरी पैक बनाने के लिए बीवाईडी ऑटो के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। अदालत द्वारा नियुक्त प्रशासक चुंग योंग-वोन ने कहा, बीवाईडी के साथ साझेदारी विद्युतीकरण के युग में खुद को ईवी निर्माता में बदलने की कंपनी की योजना का मार्ग प्रशस्त करेगी। सैंगयॉन्ग ने कहा, बीवाईडी पूर्ण स्वामित्व वाली बैटरी निर्माता फिनड्रीम इंडस्ट्री कंपनी बैटरी विकास परियोजना में भाग लेगी। योनहाप समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, सैंगयॉन्ग यू100 इवी पर साझेदारी के तहत विकसित कार बैटरी स्थापित करने की योजना बना रहा है, जो कि 2023 में बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए विकास के अधीन है। दोनों कंपनियां लंबी अवधि में संयुक्त रूप से ईवी-ओनली प्लेटफॉर्म विकसित करने के लिए साझेदारी का विस्तार करने की योजना बना रही हैं।

एशियन हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी में भारत ने जीता ब्रॉन्ज मेडल

भारत ने पाकिस्तान को 4-3 से हराकर एशियन चैम्पियंस ट्रॉफी में कांस्य जीता

ढ़ाका (एजेंसी)।

भारतीय हॉकी टीम ने एशियन चैम्पियंस ट्रॉफी-2021 में पाकिस्तान को 4-3 से हराकर कांस्य पदक अपने नाम किया है। इस रोमांचक मैच में दोनों टीमों के बीच कड़ी टक्कर हुई जिसके अंत में टीम इंडिया ने 4-3 से जीत हासिल की। इस मैच के अंतिम क्वार्टर में पाक टीम ने वापसी के प्रयास किये पर वह सफल नहीं हुई।

पहले क्वार्टर में भारतीय टीम ने शुरु से हमले किये जिससे उसे तीन पेनाल्टी कॉर्नर मिले। तीसरे मौके में भारत की ओर से अमजद अली ने पाकिस्तान के खिलाफ गोल किया। पाकिस्तान की ओर से भी पहले ही क्वार्टर में कई हमले हुए दोनों टीमों का स्कोर 1-1 हो गया। वहीं दूसरे क्वार्टर में पाक ने गोल के कई प्रयास किये पर वह सफल नहीं रही। इस दौरान होने स्कोर 1-1 बना रहा।

तीसरे क्वार्टर में पाक के हमलों में तेजी आई। पाक के अब्दुल राणा ने एक गोल कर मुकाबले में स्कोर 2-1 पहुंचा दिया पर तीसरा क्वार्टर समाप्त होने से ठीक पहले भारत ने मैच में अच्छी वापसी की। भारत के सुमित ने गोल दागकर स्कोर 3-3 से बराबरी पर ला दिया। इस मैच के आखिरी क्वार्टर में टीम इंडिया ने मैच समाप्त होने के कुछ समय पहले ही तीसरा गोल किया। भारत की ओर से तीसरा गोल वरुण कुमार ने पेनाल्टी कॉर्नर पर किया। मैच समाप्त होने से कुछ देर पहले तक दोनों टीमों की ओर से जमकर आक्रमण हुए। पहले भारतीय टीम ने लगातार दो गोल दागकर 4-2 की बढ़त बनाई पर उसके बाद पाकिस्तान ने भी एक गोल कर वापसी के प्रयास किये।

विजय हजारे ट्रॉफी : विदर्भ को हराकर सौराष्ट्र सेमीफाइनल में पहुंचा

जयपुर (एजेंसी)।

सौराष्ट्र ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बुधवार को विदर्भ को 7 विकेट से हराकर विजय हजारे ट्रॉफी के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया। कप्तान जयदेव उनादकट की अगुवाई में सौराष्ट्र के गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विदर्भ को 40.3 ओवर में 150 रन पर आउट कर दिया। विदर्भ के लिए अपूर्व वानखेड़े ने 72 रन बनाए। उनादकट ने 25 रन देकर दो विकेट लिए।

सौराष्ट्र के लिए प्रेरक मांकड ने 72 गेंद में नाबाद 77 रन बनाकर टीम को 20.1 ओवर बाकी रहते जीत दिला दी। सवाई मानसिंह स्टेडियम पर पहले बल्लेबाजी के लिये भेजे जाने पर विदर्भ ने पहले आठ ओवर में तीन विकेट गंवा दिए। उनादकट और चेतन सकारिया ने शुरूआती विकेट लिए। विदर्भ ने फॉर्म में चल रहे सलामी बल्लेबाज अथर्व तायडे (1) का विकेट जल्दी गंवा दिया जिन्हें उनादकट ने आउट किया। गणेश सतीश (1) और यश राठौड़ (1) भी सस्ते में आउट हो गए।

कप्तान फैज फजल (23) और विकेटकीपर बल्लेबाज अक्षय वाडकर (18) ने चौथे विकेट के लिए 45 रन की साझेदारी की। प्रेरक मांकड़ ने वाडकर को आउट करके इस साझेदारी को तोड़ा। विदर्भ की आधी टीम 66 रन पर आउट हो गई। वानखेड़े ने 69 गेंद में पांच चौकों और पांच छक्कों की मदद से 72 रन बनाए लेकिन दूसरे छोर से उन्हें सहयोग नहीं मिला। आदित्य सरवटे (14), ललित यादव (1), यश ठाकुर (0) और आदित्य ठाकरे (0) सस्ते में आउट हो गए।

जीत के लिए 151 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए सलामी बल्लेबाज विश्वराज जडेजा (0) और हार्विक देसाई (नौ) जल्दी आउट हो गए। दोनों विकेट ठाकरे ने लिए। शेल्डन जैकसन और मांकड़ दोनों तीसरे विकेट के लिये 22 रन ही जोड़ सके। मांकड़ और अर्पित वासवडा (नाबाद 41) ने चौथे विकेट के लिए नाबाद 116 रन बनाए और सौराष्ट्र को जीत दिलाई। मांकड़ ने अपनी पारी में 10 चौके और दो छक्के लगाए। वासवडा ने अपनी पारी में छह चौके जड़े। सेमीफाइनल में सौराष्ट्र का सामना तमिलनाडु से होगा।

एशेज सीरीज में मिल रही हार के बाद बोले इंग्लैंड कोच सिल्वरवुड, मैं मानता हूं कि इंग्लैंड के कोच के लिए सही व्यक्ति हूं

मेलबर्न। (एजेंसी)।

एशेज श्रृंखला में पहले दो टेस्ट में इंग्लैंड को करारी शिकस्त मिलने के बावजूद उसके आलोचनाओं में घिरे मुख्य कोच क्रिस सिल्वरवुड ने अपनी टीम के चयन का बचाव किया और जोर दिया कि वह अब भी इस पद के लिये सही व्यक्ति हैं। इंग्लैंड को ब्रिसबेन में नौ विकेट और एडीलेड में 275 रन से हार का सामना करना पड़ा जिससे टीम चयन की कड़ी आलोचना हुई। मेहमान टीम ने ब्रिसबेन की हरी पिच पर जेम्स एंडरसन और स्टुअर्ट ब्रॉड की अनुभवी जोड़ी को नहीं खिलाने का फैसला किया जबकि स्पिनर जैक लीच को शामिल किया। बायें हाथ के स्पिनर का प्रदर्शन खराब रहा जिसमें उन्होंने 13 ओवर में 102 रन देकर एक विकेट झटका और दूसरे टेस्ट में उन्हें बाहर कर दिया गया। इससे इंग्लैंड को स्पिन के लिये एडीलेड ओवल में रूट, डेविड मलान और ओली रॉबिन्सन पर निर्भर रहना पड़ा।

सिल्वरवुड इंग्लैंड के मुख्य चयनकर्ता भी हैं। उनसे जब 'बीबीसी' ने पूछा कि क्या वह यही टीम चुनेंगे? तो उन्होंने जवाब दिया, ''ईमानदारी से कहूं, तो मैं ऐसा करूंगा।'' उन्होंने कहा, ''इसमें हमेशा विभाजित राय होंगी। आप एक टीम को चुनते हो और जरूरी नहीं है कि आपसे सभी सहमत हो जायें लेकिन मैं गुलाबी गेंद के टेस्ट में हमारे कौशल से खुश हूं इसलिये मैं फिर से इसी टीम को चुनूंगा।'' तीसरा टेस्ट मेलबर्न में 'बॉक्सिंग डे' को शुरू होगा और टीम की रवानगी से पहले सिल्वरवुड ने मंगलवार को अपना रूख दोहराया।

उन्होंने कहा, ''हमने उन परिस्थितियों के लिये सर्वश्रेष्ठ आक्रमण चुना और आप हमारे आक्रमण को देख सकते हो कि इसमें काफी अनुभव था। मैं इस मैच में उस आक्रमण से खुश था और मैं पिछले मैच में भी अपने आक्रमण से खुश था।'' सिल्वरवुड के मार्गदर्शन में इंग्लैंड ने पिछले 11 टेस्ट में नौ मैच गंवाये हैं और केवल एक ही जीता है। कई पूर्व खिलाड़ियों का मानना हे कि उन्हें दो हार की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। इन पूर्व खिलाड़ियों में पूर्व कप्तान माइकल आथरटन भी शामिल हैं।

सिल्वरवुड ने कहा, ''क्या मैं खिलाड़ियों की बेहतर होने में मदद के लिये सही व्यक्ति हूं? हां, मेरा मानना है कि मैं हूं। हमारी कुछ बातचीत हुई और मेरा मानना है कि ऐसा करने के लिये मेरे साथ सही कोचिंग स्टाफ है।'' उन्होंने कहा, ''जब आप इस तरह का पद संभालते हो तो आप स्वीकार करते हो कि आपका काम क्या है। ऐसा ही है। क्या मुझे लगता है कि मैं इसके लिये सही व्यक्ति हूं? हां, मैं मानता हूं, वर्ना पहली बात तो मैं इस पद को लेता ही नहीं।

सीएसए ने भारतीय टीम को दिया सुरक्षित वापसी का भरोसा

जोहांसबर्ग (एजेंसी)।

दक्षिण अफ्रीका में कोविड-19 के नए वेरिएंट ओमिक्रॉन के बढ़ते मामलों से आशंकित दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट बोर्ड ने कहा है कि अगर यात्रा प्रतिबंध लगते हैं तो भी भारतीय क्रिकेटरों को सुरक्षित रुप से स्वदेश पहुंचाया जाएगा। भारतीय क्रिकेट बोर्ड और क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका (सीएसए) के बीच सहमति से ही यह सीरीज हो रही है। संक्रमण के कारण ही यह सीरीज अब 26 दिसंबर से हो रही है जबकि पहले यह 17 दिसंबर से शुरु होनी थी। क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका (सीएसए) द्वारा बीसीसीआई को दी गई कई गारंटियों में भारतीय खिलाड़ियों को किसी भी कारण से भर्ती होने की जरुरत होने पर अस्पताल में बिस्तर भी शामिल है।

सीएसए के मुख्य चिकित्सा अधिकारी शुएब मांजरा ने कहा, यदि किसी भारतीय खिलाड़ी को किसी भी कारण से अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता होती है, तो हमने कुछ अस्पताल समूहों से संपर्क किया है, जिन्होंने हमें अस्पतालों में बिस्तर की गारंटी दी है। उन्होंने आगे कहा, यदि स्वदेश लौटने की आवश्यकता है और सीमाएं बंद हैं, तो भी सरकार ने गारंटी दी है कि वे खिलाड़ियों और टीम को भारत वापस जाने की अनुमति देंगे। पूरा दौरा बंद दरवाजों के पीछे खेला जाएगा, जिसमें भारतीय खिलाड़ियों को आम जनता से संपर्क की अनुमति नहीं होगी। मांजरा ने कहा कि सीएसए ने मेहमाम टीम की सुरक्षा पक्की करने के लिए सब कुछ किया है और अगर वे जब भी वापस जाना चाहते हैं तो भी इसमें उनकी सहायता की जाएगी।

ला लिगा में बार्सिलोना और सेविला का मुकाबला बराबरी पर रहा

बार्सिलोना। बार्सिलोना ने स्पेनिश फुटबॉल लीग ला लिगा में सेविला को ड्रॉ पर ही रोक दिया। इस मैच में सेविला की ओर से पापू गोमेज ने 32वें मिनट में एक गोल कर टीम को बढ़त दिलाई। वहीं रोनाल्डो आरुजो ने मध्यांतर से ठीक पहले एक गोल कर बार्सिलोना को बराबरी पर ला दिया। इस मैच के बराबरी पर रहने से सेविला शीर्ष पर कायम रियाल मैड्रिड से पांच अंक पीछे हो गया है हालांकि वह दूसरे स्थान पर बना हुआ है। वहीं एक अन्य मैच में विल्लारीयाल ने गेरॉड मोरेनो और बोलाये डिया के किये दो-दो गोल से अलावेस को 5-2 से हराया। लीग में संक्रमण के मामले भी बढ़े हैं। रियाल मैड्रिड के डिफेंडर डेविड अलाबा और मिडफील्डर इस्को अलारकॉन भी संक्रमित पाये गये हैं। इस प्रकार उसके संक्रमित खिलाड़ियों की संख्या बढ़कर आठ हो गयी है। इससे क्लब परेशानी में आ गया है क्योंकि लुका मोड्रिच, मार्को असेंसियो, रोडग्योरो, गैरेथ बेल, मार्सेलो और गोलकीपर एंड्री लुनिन जैसे खिलाड़ी पहल ही परीक्षण पॉजिटिव आने के कारण बाहर हैं। अब इनमें से कोई भी खिलाड़ी एथलेटिक बिलबाओ के खिलाफ होने वाले मैच में नहीं खेलेगा। वहीं बिलबाओ भी चार खिलाड़ियों के बिना खेलेगा जिनमें स्पेन के गोलकीपर उनाई सिमोन और डिफेंडर इनिगो मार्टिनेज शामिल हैं।

आर्चर की कोहनी का दूसरा ऑपरेशन, वेस्टइंडीज के खिलाफ नहीं खेलेंगे

लंदन। इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने कहा कि तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर ने अपनी चोटिल दाहिनी कोहनी का दूसरा ऑपरेशन करवाया है और वह अगली गर्मियों तक क्रिकेट से दूर रहेंगे। इंग्लैंड के इस तेज गेंदबाज की अनुपस्थिति वर्तमान की एशेज श्रृंखला के दौरान भी खल रही है। उनका 11 दिसंबर को लंदन में ऑपरेशन किया गया। ईसीबी ने बयान में कहा, ''यह ऑपरेशन उनकी दाहिनी कोहनी में लंबे समय से चले आ रहे दर्द को समाप्त करने के लिये किया गया।'' यह 26 वर्षीय तेज गेंदबाज पिछले नौ महीनों से शीर्ष स्तर की क्रिकेट में नहीं खेला है। वह मार्च में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला में भी नहीं खेल पाएंगे। आर्चर की कोहनी का मई में इंडियन प्रीमियर लीग से हटने के बाद ऑपरेशन किया गया था। उन्हेंइंग्लिश काउंटी चैंपियनशिप मैच में ससेक्स के लिए गेंदबाजी करते समय उसी हिस्से में फिर से दर्द महसूस हुआ था।

रुट की जगह लाबुशेन टेस्ट रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचे , विराट सातवें स्थान पर खिसके

दुबई (एजेंसी)।

गेंदबाजी में कमिंस और अश्विन पहले और दूसरे स्थान पर कायम

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की ताजा टेस्ट बल्लेबाजी रैंकिंग में ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज मार्नस लाबुशेन शीर्ष पर पहुंच गये हैं। लाबुशेन को इंग्लैंड के खिलाफ जारी एशेज सीरीज में अच्छी बल्लेबाजी का लाभ मिला है। वहीं पहले स्थान पर चल रहे इंग्लैंड के कप्तान जो रुट दूसरे स्थान पर खिसक गये हैं। भारतीय टीम के कप्तान विराट कोहली को एक स्थान का नुकसान हुआ है और वह फिसलकर सातवें स्थान पर पहुंच गये हैं।

भारत के ही सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा पांचवें स्थान पर बने हुए हैं। विराट पहले छठे स्थान पर थे पर अब उनके 756 अंक हैं जिससे वह सातवें स्थान पर खिसक गये हैं। लाबुशेन ने एशेज श्रृंखला में पहले दो मैचों में शानदार प्रदर्शन कर पहली बार आईसीसी रैंकिंग में शीर्ष स्थान हासिल किया है। करियर के सर्वश्रेष्ठ 912 रेटिंग अंक लेकर अब वह रूट 897 अंक को दूसरे स्थान पर धकेलने में सफल रहे हैं। लाबुशेन इस सीरीज से पहले वह चौथे स्थान पर थे पर ब्रिसबेन में पहले एशेज टेस्ट में 74 रन बनाने के बाद वह दो स्थान के लाभ से दूसरे स्थान पर पहुंच गए थे। इसके बाद एडीलेड में उन्होंने एक शतक और अर्धशतक बनाकर अपनी टीम को जीत दिलायी थी।

गेंदबाजों की बात करें तो ऑस्ट्रेलियाई कप्तान पैट कमिंस पहले जबकि भारत के आर अश्विन दूसरे नंबर पर बने हुए हैं। ऑस्ट्रेलिया गेंदबाज मिशेल स्टार्क दूसरे टेस्ट में 80 रन देकर छह विकेट के प्रदर्शन से टेस्ट गेंदबाजों की रैंकिंग में शीर्ष 10 में पहुंच गये हैं। वह नौंवे स्थान पर पहुंच गए हैं। दूसरी ओर टी20 अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों की रैंकिंग में पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम बल्लेबाजों की सूची में फिर शीर्ष स्थान पर पहुंच गये हैं। इससे पहले वह तीसरे नंबर पर थे।

पाक के ही विकेटकीपर बल्लेबाज मोहम्मद रिजवान 798 करियर के सर्वश्रेष्ठ रेटिंग अंक से बल्लेबाजों की रैंकिंग में तीसरे स्थान पर पहुंच गए है। भारत के लोकेश राहुल पांचवें स्थान पर पहुंच गये हैं।

पीसीबी सीईओ का बड़ा खुलासा, आईसीसी ने पाकिस्तान की छवि खराब की

कराची : पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के नए मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) फैसल हसनैन ने खुलासा किया है कि देश के बारे में 'ज्यादातर नकारात्मक' रिपोर्ट और 'सुर्खियां' ही आईसीसी (अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट बोर्ड) के नोटिस बोर्ड पर लगाई जाती रहीं और कहा कि देश के बारे में धारणा और इसकी प्रतिष्ठा एक समस्या है। आईसीसी के मुख्य वित्तीय अधिकारी के रूप में काम कर चुके हसनैन ने कहा कि यह सिर्फ देश के क्रिकेट को ही नहीं बल्कि व्यापार और पर्यटन को भी प्रभावित कर रहा है। हसनैन ने कहा कि पाकिस्तान के प्रति धारणा अच्छी नहीं है। मैं इसके बारे में काफी ईमानदार हो सकता हूं। मैं आईसीसी और जिम्बाब्वे क्रिकेट के साथ काम कर चुका हूं इसलिए मैं जानता हूं कि पाकिस्तान क्रिकेट के बारे में अंदर किस तरह की चर्चाएं होती हैं। पाकिस्तान के प्रति धारणा और इसकी प्रतिष्ठा एक समस्या है। पाकिस्तान की प्रतिष्ठा के कारण उसके लिये शीर्ष अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट टीमों को आमंत्रित करना मुश्किल कर देता है। लाहौर में 2009 में श्रीलंका की टीम बस पर हुए आतंकी हमले के बाद से एक दशक से ज्यादा समय किसी भी टीम ने पाकिस्तान का दौरा नहीं किया था। उन्होंने कहा कि मैं आईसीसी के कार्यालयों के नोटिस बोर्ड पर पाकिस्तान के बारे में नकारात्मक सुर्खियां या खबरें ही देखता रहा हूं। हसनैन ने मीडिया से पीसीबी (पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड) के साथ मिलकर देश के बारे में नकारात्मक धारणा को बदलने में सकारात्मक भूमिका निभाने की बात करने के साथ कहा कि देश में क्रिकेट की पिचों में सुधार की जरूरत है। उन्होंने कहा कि अब धारणा यह है कि अगर आप पाकिस्तान जाओगे तो आप लगभग एक महीने तक कमरे में रहोगे, आप बाहर नहीं जा सकते, पिचें निर्जीव हैं आदि आदि और इससे अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों की मानसिकता पर असर पड़ता है। मेरा काम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस धारणा को बदलने का है।

सचिन तेंदुलकर की यह सलाह मानी तो दक्षिण अफ्रीका में भारत बदल सकता है इतिहास!

नई दिल्ली (एजेंसी)।

गॉड ऑफ क्रिकेट कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजों में से एक है। तेंदुलकर ने दक्षिण अफ्रीका की कठिन पिच पर भारत को कई मैचों में जीत का स्वाद चखवाने में मदद की है। भारत भले ही कभी दक्षिण अफ्रीका से टेस्ट सीरीज नहीं जीता हो लेकिन 1992, 1996, 2001, 2006, 2010 का हिस्सा रहे सचिन तेंदुलकर ने दक्षिण अफ्रीका में पांच शतक लगाए हैं। अब टीम इंडिया एक बार फिर से दक्षिण अफ्रीका के साथ भिड़ने के लिए दक्षिण अफ्रीका रवाना हो गयी हैं। भारत और दक्षिण अफ्रीका की तीन मैचों की टेस्ट सीरीज 26 दिसंबर से शुरू होने वाली हैं। ऐसे में महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर के पास दक्षिण अफ्रीका दौरे पर भारत के बल्लेबाजों को जीत के लिए दो मूलमंत्र दिया है। भारतीय बल्लेबाजों के लिए उनका पहला मूलमंत्र है कि पहले 25 ओवरों के लिए फ्रंट फुट डिफेंस पर ध्यान दें। दूसरा मंत्र है किनारा करने से बचने के लिए सुनिश्चित करें कि हाथ शरीर से बहुत दूर न जाएं।

दक्षिण अफ्रीका दौरे से पहले सचिन तेंदुलकर का बल्लेबाजों को मूलमंत्र

तेंदुलकर ने कहा, मैंने हमेशा कहा है, फ्रंट फुट डिफेंस महत्वपूर्ण है और फ्रंट फुट डिफेंस की गिनती यहां होगी। पहले 25 ओवर, फ्रंट फुट डिफेंस महत्वपूर्ण होने वाले हैं। खेलते समय हाथ शरीर से दूर नहीं जा रहे थे। जब आपके हाथ आपके शरीर से दूर जाने लगते हैं, तब आप धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से नियंत्रण खोना शुरू करते हैं। लेकिन वहां पर खेलते समय आपको यह ध्यान रखना है कि आपके हाथ शरीर से दूर न जाएं इससे लंबे समय तक टिका जा सकता है।

बल्लेबाजों के लिए दक्षिण अफ्रीका की पिच है सबसे मुश्किल

दक्षिण अफ्रीका की पिच बल्लेबाजों के लिए सबसे कठिन पिचों में से एक है जहां पारंपरिक रूप से तेज गेंदबाजों का दबदबा रहा है। यह एक ऐसी जगह जहां भारत ने कभी टेस्ट सीरीज नहीं जीती है। यह एक ऐसी धारण है जिसे इस बार विराट कोहली की कप्तानी में बदने की लोग उम्मीद कर रहे हैं। तेंदुलकर ने बोरिया के साथ बैकस्टेज पर कहा दक्षिण अफ्रीका में जीत के लिए जरूरी है कि उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि शीर्ष क्रम घरेलू तेज गेंदबाजों के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करे, खासकर जब गेंद नई हो। मैंने हमेशा कहा है, फ्रंट फुट डिफेंस महत्वपूर्ण है। सामने की ओर, सामने के पैर की रक्षा महत्वपूर्ण है। और वह यहाँ गिना जा रहा है। पहले 25 ओवर, फ्रंट फुट डिफेंस महत्वपूर्ण होने वाला है।

तेंदुलकर ने इंग्लैंड में केएल राहुल और रोहित शर्मा के प्रदर्शन की तारीफ की

तेंदुलकर ने समझाया कि इंग्लैंड दौरे के दौरान, रोहित शर्मा और केएल राहुल ने काफी रन बनाए, जिसके लिए तेंदुलकर ने एक साधारण समायोजन को जिम्मेदार ठहराया। राहुल और रोहित ने इंग्लैंड टेस्ट के दौरान एक 'शानदार काम' किया और शरीर के करीब हाथ रखने के महत्व को दोहराया। वे मौके पर पीटे गए और यह ठीक है। हर बल्लेबाज पिट जाता है। गेंदबाज वहां विकेट लेने के लिए हैं, तो कोई बात नहीं। लेकिन जब आपके हाथ आपके शरीर से दूर जाने लगते हैं, तब आपके गेंद को किनारे करने की संभावना होती है।

शीतकालीन ओलंपिक के राजनयिक बहिष्कार के बीच ही चीन को मिला रुस का साथ

बीजिंग। चीन में अगले साल होने वाले शीतकालीन ओलंपिक खेलों के जरिये राजनीति भी गहरा गयी है। जहां एक ओर अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और यूरोपीय देशों ने मानवाधिकार के मामले को लेकर इन खेलों का राजनयिक बहिष्कार करने की घोषणा की है। वहीं दूसरी ओर चीन के समर्थन में रूस उतरा है। ऐसे चीन को रूस का साथ मिला है।

आस-पास भी बहुत कुछ

ऊटी व आस-पास घूमने के लिए हमने एक दिन के लिए छोटी बस किराये पर ली थी। मानसून में ऑफ सीजन होता है, तो हमें यह बेहद कम दाम में उपलब्ध हो गई। ऊटी में तो हम जगह-जगह घूमे ही, ऊटी के आस-पास भी बहुत-से ऐसे स्थान थे जहां जाकर हम रोमांचित हुए बिना नहीं रह सके। पहले जिक्र करते हैं ऊटी से आठ किलोमीटर दूर और समुद्र तल से 2623 मीटर की ऊंचाई पर स्थित डोडाबेटा शिखर की। यहां पूर्वी व पश्चिमी घाटों का मिलन होता है। यहां से नीलगिरी पहाडियों का अकल्पनीय दृश्य नजर आता है। डोडाबेटा शिखर शोला वनों से घिरा है। पर्यटन विभाग ने यहां एक दूरबीन भी लगा रखी है।

यूं लगा जन्नत में है ऊटी

मुन्नार की मखमली खूबसूरती से तीन दिन तक रू-ब-रू रहने के बाद हमारी टोली ऊटी के लिए रवाना हुई तो एक उदासी-सी मन में थी। एक तो जन्नत जैसे मुन्नार से हम विदा ले रहे थे जहां से वापस आने का दिल शायद ही किसी का करे। दूसरे, मन में यह सवाल बार-बार सिर उठा रहा था कि मुन्नार को देखने के बाद ऊटी कहीं फीका लगा और अगले दो दिन बेकार चले गए, तो? मुन्नार से कोयम्बटूर और वहां से आगे ऊटी जाने के लिए यूं तो अच्छी सडक है, पर चूंकि टोली में आठ-दस बच्चे और कुछ महिलाएं भी थीं, तो बेहतर यही था कि सडक के मुश्किल सफर के बजाय ऊटी तक की दूरी ट्रेन से तय की जाए। इस फैसले की वजह मेट्टूपालयम से ऊटी तक घुमावदार पहाडी रास्तों पर रेंगने वाली टॉय ट्रेन भी थी जो खासकर बच्चों के लिए मजेदार अनुभव होता।

एक सफर में दो रंग

ऊटी तक के ट्रेन के इस सफर को हम दो हिस्सों में बांट सकते हैं। पहला, मेट्टूपालयम से कुन्नूर। यहां ट्रेन स्टीम इंजन से चलती है। स्टीम इंजन है तो जाहिर है ट्रेन की चाल भी बेहद धीमी रहती है। कुन्नूर तक चढाई ज्यादा तीखी है जिसे स्टीम इंजन अपनी कछुआ चाल से बडी आसानी से तय कर लेता है। पूरा रास्ता चट्टानी है, रास्ते में ऊंचे पेड हैं और अनेक छोटे-बडे पुल भी। कुन्नूर इस रेलखंड का एक अहम स्टेशन है जहां गाडी काफी देर रुकती है। खाने-पीने के यहां बेहतर बंदोबस्त हैं। कुन्नूर में ट्रेन स्टीम इंजन का दामन छोडकर डीजल इंजन को अपना सारथी बनाती है, और शुरू हो जाता है सफर का दूसरा हिस्सा जो कहीं ज्यादा सुकून देने वाला है। कह सकते हैं कि ऊटी का असल रंग दिखना यहीं से शुरू होता है। चाय के तराशे हुए बौने पौधे ऊंचे पेडों की जगह ले लेते हैं। अभी तक जो गहरा हरा रंग आंखों तक पहुंच रहा था, उस पर लगता है जैसे प्रकृति ने दिल खोलकर धूप मसल दी हो। चारों तरफ खिली हुई हरियाली.. मन को प्रफुल्लित करती हरियाली। और इस हरियाली के बीच गर्व से सिर उठाए खडे छोटे-छोटे घर.. एक अलग ही दृश्य है यह, जो एक बार दिल पर छप गया तो फिर कभी धूमिल होने वाला नहीं।

बादलों का है अलग रिश्ता

समुद्र तल से 2240 मीटर की ऊंचाई पर स्थित ऊटी अंग्रेजों का समर रिजॉर्ट हुआ करता था। मूल रूप से यह इलाका टोडा जनजाति का घर है। उन्होंने अंग्रेजों को अपनी जमीन का एक बडा हिस्सा दे दिया था, जिस पर अंग्रेजों ने शहर बसाया। इस इलाके का असल नाम ऊटकमंड है, इसी को अंग्रेजों ने छोटा करके ऊटी कर दिया। हालांकि, अब शहर का आधिकारिक नाम उदगमंडलम है जो ऊटकमंड का तमिलीकरण है। पांच घंटे के सफर के बाद दिन में करीब 12 बजे ट्रेन उदगमंडलम स्टेशन पर जा लगी तो बूंदाबांदी हो रही थी। हम लोग मानसून के दौरान वहां गए थे। इस मौसम में बादलों का दिल कब हो जाए ऊटी को भिगोने का, कह नहीं सकते। बादलों का ऊटी से अलग ही रिश्ता है। जब-जब दिल करता है, ये बादल किसी बेसब्र प्रेमी की तरह आकर ऊटी को अपने आगोश में ले लेते हैं। इसका प्रमाण ऊटी की गोद में विचरण करते वक्त मिला। बादल चेहरे पर आ-आकर ठहरते और पानी के कण गालों पर छोडकर आगे निकल जाते। बारिश मुन्नार में भी खूब देखी हमने.. वहां भी बादल पहाडों व पेडों के साथ अठखेलियां करते दिखे। लेकिन वहां के अप्रतिम सौंदर्य को बादल अपने आलिंगन में नहीं लेते। मानो, कोई झिझक उन पर तारी रहती हो। लेकिन ऊटी में समीकरण अलग है। यहां बादल आएंगे तो पहले प्यार में डूबकर हर गोशे को छुएंगे और फिर भावुक होकर बरस पडेंगे।

खूबसूरत शहर

ऊटी की सुंदरता की किसी और जगह से तुलना बेमानी है। नीलगिरी की गोद में एक चुप्पी ओढे शहर की तस्वीर पेश करता है यह। बडे नाम वाले हिल स्टेशनों के मुकाबले जिंदगी बहुत तेज नहीं है यहां। ऊंचाई से देखो तो अंग्रेजी स्टाइल में बने घरों की छटा अलग ही है। घरों के जमावडे के बीच से झांकता वहां का मशहूर रेसकोर्स.. इसके अलावा हरे-भरे बाग, झील, गोल्फ कोर्स, स्टेशन परिसर.. हमने ऊटी का यह विहंगम नजारा डोडाबेटा टी फैक्टरी की बालकनी से देखा। यह दक्षिण भारत में सबसे ज्यादा ऊंचाई पर बनी टी-फैक्टरी है। पांच रुपये की टिकट पर चाय बनाने की प्रक्रिया यहां देख सकते हैं। ताजा चाय की महक में तलब लगना लाजिमी है। लीजिए, इलायची वाली चाय का कप भी हाजिर है आपके लिए। चुस्की लीजिए और तर-ओ-ताजा हो जाइए। यहां कई तरह की चाय बिक्री के लिए भी उपलब्ध है। हमारे साथियों ने कितनी खरीदारी की यहां, इसका पता बाहर आकर चला जब हरेक के हाथ में दो-दो थैले झूलते नजर आए।

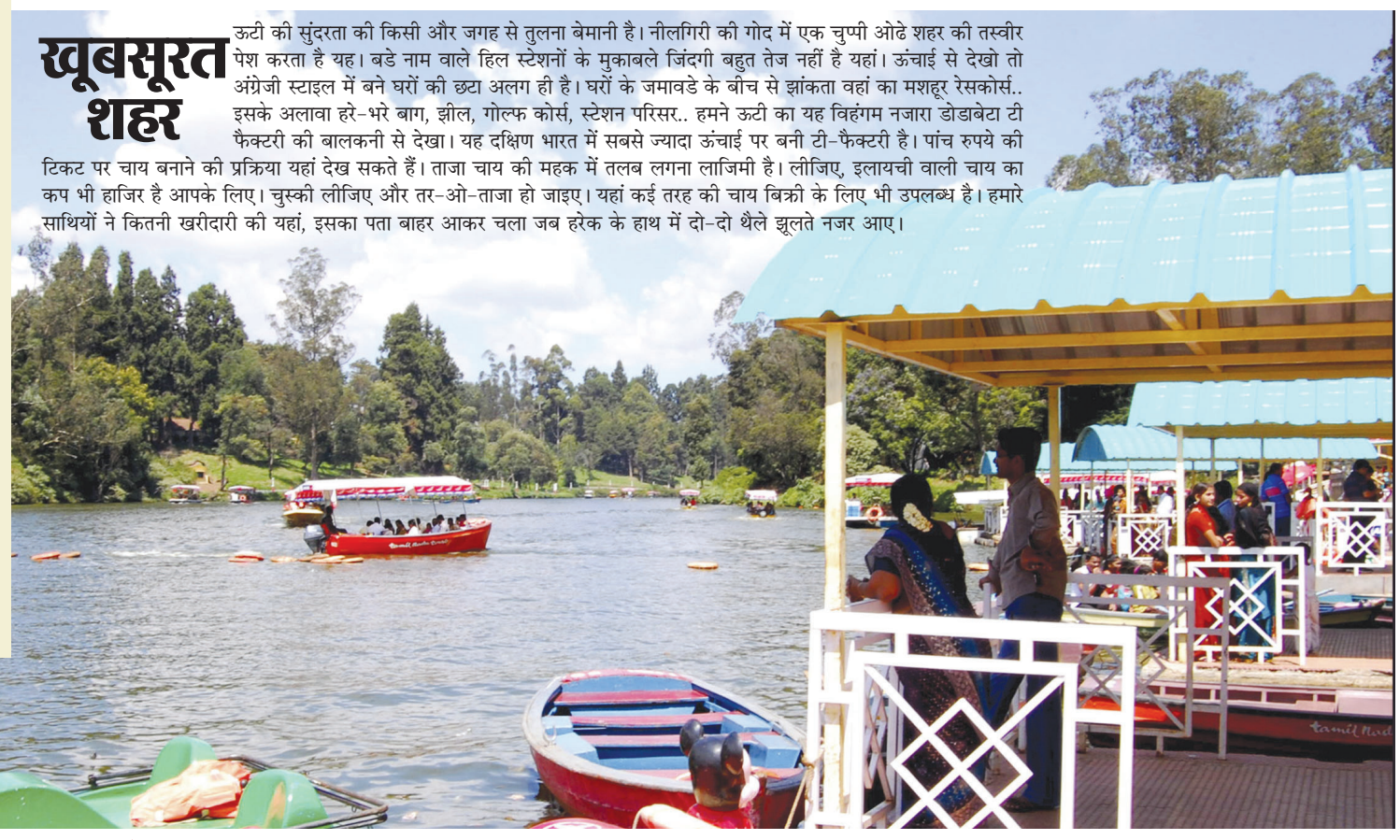

लोकेशन

छुक-छुक रेलगाडी

मुन्नार को अलविदा कहकर हम बस से कोच्चि पहुंचे, जहां से कोयम्बटूर और फिर आगे मेट्टूपालयम तक हमें ट्रेन से जाना था। मेट्टूपालयम कस्बा कोयम्बटूर से 35 किलोमीटर की दूरी पर है और यहां तक बडी लाइन की ट्रेनें जाती हैं। सफर का असल रोमांच मेट्टूपालयम से शुरू होता है जहां से नैरोगेज लाइन पर चार डिब्बों वाली ट्रेन ऊटी के लिए निकलती है। नीलगिरी पहाडियों में चीड के पेडों के बीच से मंद गति से तय होता यह सफर बेहतरीन कुदरती नजारे हमारे सामने पेश कर रहा था। कहीं ऊंचाई से गिरते पानी का शोर था, कहीं पहाडों ने अपने हरे चोगे पर सफेद बादल कंगन की तरह टांग रखे थे, तो कहीं सांप की तरह रेंगती सडक हमसे आ मिलने को बेताब दिख रही थी। रास्ते में प्रहरी की तरह खडे ऊंचे पेड और कुछ पलों के लिए ट्रेन को निगल लेने वाली सुरंगें हमारे रोमांच को दूना करने में कोई कसर नहीं छोड रहे थे। जैसे ही ट्रेन सुरंग के अंधेरे में समाती, यात्रियों का जोशभरा शोर उस अंधेरे पर भारी पडता दिखता। इस पूरे सफर के दौरान दिक्कत थी तो सिर्फ एक, और वो यह कि इस छुटकी-सी ट्रेन में बैठने की जगह बेहद तंग थी। लेकिन इस दौरान अगर आप खुद को कुदरत के मोहपाश में जकडे रहने देते हैं तो इस दिक्कत का एहसास ही नहीं होता।

कई रंग हैं ऊटी में

हमारे सामने ऊटी शहर अपने विविध रंगों को लेकर शान से खडा था। घूमने-फिरने के लिए ऊटी में और इसके आस-पास कई जगहें हैं। ऊटी की बात करें तो सबसे पहले जिक्र झील का आएगा। स्टेशन से दो किलोमीटर की दूरी पर मौजूद इस कृत्रिम झील पर सैलानियों तथा छुट्टी बिताने आए स्थानीय लोगों की भीड हमें नजर आई। 190 साल पहले यह झील जॉन सुलिवन ने बनवाई थी। यहां पर नौका विहार का आनंद लेने से हम खुद को नहीं रोक पाए। नाव में आधे घंटे तक झील की सैर के दौरान कितने ही प्यारे-प्यारे नजारों ने हमें बांधे रखा। यहां नौका विहार के अलावा मनोरंजन के अन्य साधन भी हैं, खासकर बच्चों के लिए। टॉय ट्रेन आपको झील के किनारे-किनारे चक्कर कटाकर लाती है तो लेक गार्डन में थोडी देर सुस्ताना सारी थकान भगा देगा। इसके अलावा, खाने-पीने व शॉपिंग के भी यहां खासे विकल्प नजर आए। झील के पास ही ऊटी का मशहूर थ्रेड गार्डन है, जहां धागे से रंग-बिरंगे फूल बनाए जाते हैं। यहां की खासियत है कि फूलों को हाथ से बनाया जाता है और इन्हें बनाने में सुई का इस्तेमाल भी नहीं होता। इसके अलावा, दुनियाभर में मशहूर बॉटेनिकल गार्डन यहां है जहां हजारों प्रजातियों के पेड-पौधे हैं। 22 एकड में फैले इस गार्डन में हर साल मई में होने वाले फ्लावर शो में बडी तादाद में लोग पहुंचते हैं। यहां एक अन्य आकर्षण एक पेड का करीब दो करोड साल पुराना जीवाश्म है। बॉटेनिकल गार्डन के पास ही चिल्ड्रन पार्क है। यहां जाएंगे तो लगेगा कि मखमल का कोई गलीचा आपके सामने बिछा हुआ है। बच्चों का दिल अगर यहां से आने को न करे तो इसमें उनका कोई कुसूर नहीं। ऊटी का एक अन्य आकर्षण छह एकड में फैला रोज गार्डन है। यह विजयनगरम इलाके में एल्क हिल की ढलान पर है जहां गुलाब के 17,000 से ज्यादा पौधे हैं। तभी तो इसे देश का सबसे बडा रोज गार्डन होने का गौरव हासिल है। इसके अलावा, गोल्फ कोर्स व रेस कोर्स की हरियाली वहां जाने वाले को अपने जादू में बांध लेने के लिए काफी है।

वेनलॉक का जादू

टोडा जनजाति के घरों को तो हमने दूर से देखा, लेकिन वेनलॉक के नैसर्गिक सौंदर्य को हम अपने भीतर भरकर ले लाए। सफेद बादलों में लिपटी चटख हरे रंग की पहाडियां.. हर बार पलकें उठाते ही भीतर एक पूरी दुनिया आबाद हो रही थी, और हर सांस के साथ मानो अमृत घुलता जा रहा था शरीर में। यह स्थान ऊटी से छह मील व नौ मील के बीच स्थित है। स्थानीय लोग बोलचाल में इसे फिल्म शूटिंग पॉइंट कहते हैं। चाय की खेती होने से पहले नीलगिरी पर्वतमाला की हर पहाडी ऐसी ही होती थी।

हल्की ढलान वाली इन बल खाती हुई पहाडियों की तुलना ब्रिटेन के यॉर्कशर डेल्स से की जाती है। पहले तो हमने सोचा कि बारिश में कौन चढेगा पहाडी के ऊपर, चलो रहने देते हैं। लेकिन फिर हिम्मत की तो ऊपर जाकर पता चला कि हमसे क्या छूटने जा रहा था। एक पहाडी की ढलान दूसरी पहाडी की ढलान में मिल रही थी। दूर तक जन्नत के सिवा कुछ नहीं था। ये क्या! अभी-अभी जो जगह साफ दिख रही थी, उसे अचानक सफेद जलकणों ने ढक लिया था। ठंड से हम कांप रहे थे और कानों के सिरे लाल हुए जा रहे थे।

लेकिन यकीन मानिए, वहां से वापस आने के लिए मन को समझाना मुश्किल हो रहा था। हमारे सामने जो था, वो किसी स्वप्न से कम नहीं था। हमारा ऊटी आना सफल हो गया।

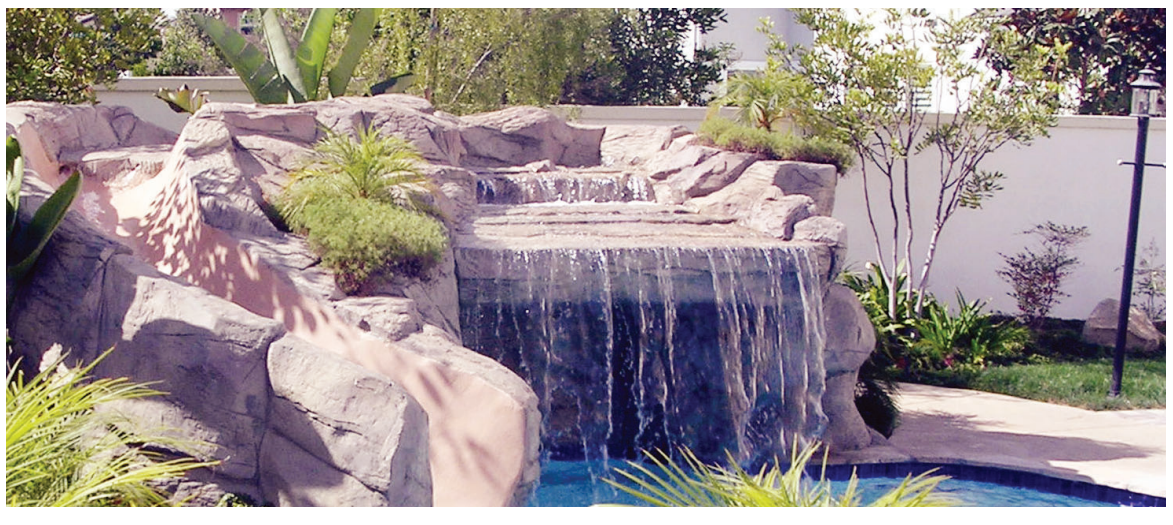

सार समाचार

क्या चीन के जरिये धरती पर होगी डायनासोर की वापसी? 7 करोड़ साल पुराने अंडे के अंदर था ओविराप्टोरोसॉर का भ्रूण

नई दिल्ली। चीन के दक्षिणी हिस्से में वैज्ञानिकों ने एक पूरी तरह से संरक्षित डायनासोर के अंडे की खोज की है। अंडे के भीतर बेहतर अच्छी तरह से संरक्षित एक डायनासोर भ्रूण मिला है। भ्रूण की खोज दक्षिणी चीन के गांझोउ में हुई और शोधकर्ताओं का अनुमान है कि यह कम से कम 66 मिलियन वर्ष पुराना है। यह एक टूथलेस थेरोपोड डायनासोर, या ओविराप्टोरोसॉर माना जाता रहा है और इसका नाम बेबी यिंगलियांग रखा गया है। शोधकर्ता डॉ फियोन वैसम मा ने कहा कि यह ₹इतिहास में पाया गया अब तक का सबसे दुर्लभ डायनासोर भ्रूण है।

जन्म लेने वाला था डायनासोर?

एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, वैज्ञानिकों को मिला यह भ्रूण जन्म लेने वाला था। जीवाश्म से पता चलता है कि भ्रूण एक घुमावदार स्थिति में था। पक्षियों में इस तरह की मुद्रा (जैसी बेबी यिंगलियांग की थी) 'टकिंग' के दौरान देखी जाती है। आधुनिक टकिंग केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से कंट्रोल होने वाली एक प्रक्रिया है जो एक सफल हैचिंग के लिए जरूरी है।

ओविराप्टोरोसॉर प्रजाति का भ्रूण

यूनिवर्सिटी ऑफ बर्मिंघम के जीवाश्म विज्ञानियों ने कहा कि यह भ्रूण ओविराप्टोरोसॉर प्रजाति से संबंधित है, जिसके दांत नहीं थे और चोंच थी। ओविराप्टोरोसॉर पंखों वाले डायनासोर थे, जो एशिया और उत्तरी अमेरिका की चट्टानों में पाए जाते हैं।

हार्वर्ड के प्रोफेसर को चीन से संबंध छिपाने का दोषी पाया गया

बोस्टन (अमेरिका)। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर को चीन संचालित भर्ती कार्यक्रम से जुड़े होने की बात छिपाने का दोषी पाया गया है। हार्वर्ड के रसायन विज्ञान एवं रासायनिक जीव विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष, चार्ल्स लिबर (62) ने झूठे कर रिटर्न दाखिल करने के दो आरोप, झूठे बयान देने के दो आरोप आदि में दोषी नहीं होने की बात कही थी। बोस्टन की संघीय अदालत में पांच दिनों तक चली सुनवाई के बाद, ज्यूरी ने फैसला सुनाने से पहले लगभग दो घंटे 45 मिनट तक विचार-विमर्श किया। लिबर के वकील मार्क मुकासी ने तर्क दिया था कि अभियोजकों के पास आरोप साबित करने के सबूत नहीं थे। जांचकर्ताओं ने लिबर की गिरफ्तारी से पहले उनके साथ हुई पूछताछ का भी कोई ब्योरा नहीं रखा। उन्होंने तर्क दिया कि अभियोजक यह साबित नहीं कर पाएंगे कि लिबर ने जानबूझकर, इरादतन या मर्जी से ऐसा काम किया या उन्होंने कोई भी गलत बयान दिया। वहीं, अभियोजकों ने तर्क दिया कि लिबर ने जानबूझकर चीन की थाउजेंट टैलेंट प्लान योजना से खुद के जुड़े होने की बात को छिपाया। इस कार्यक्रम को विदेशी प्रौद्योगिकी एवं बौद्धिक संपदा का ज्ञान रखने वाले लोगों को चीन में भर्ती करने के लिए तैयार किया गया है। लिबर को इस मामले में जनवरी 2020 में गिरफ्तार किया गया था। गिरफ्तारी के बाद से ही वह हार्वर्ड से सवैतनिक प्रशासनिक अवकाश पर हैं।

इजराइली गोलीबारी में एक शख्स की मौत, सैन्य चौकी में घुसने की कर रहा था कोशिश

रामल्ला। इजरायली सैनिकों ने मंगलवार को एक फलस्तीनी व्यक्ति की हत्या कर दी, जिसने कथित तौर पर अपने वाहन को वेस्ट बैंक में एक सैन्य चौकी में घुसने की कोशिश की थी। सेना के अधिकारियों ने यह जानकारी जी। फलस्तीनी मीडिया के अनुसार, सैनिकों ने वाहन पर गोलियां चलाईं, जिसमें व्यक्ति की मौत हो गई और उसकी कार अनियंत्रित होकर एक सैन्य वाहन से टकरा गई और जेनिन के उत्तरी वेस्ट बैंक शहर के पास आग की लपटों में घिर गई। मारे गए फलस्तीनी की पहचान उजागर नहीं की गई, और इजराइली बलों में से किसी के भी घायल होने की कोई खबर नहीं है। मंगलवार की घटना सप्ताहांत में वेस्ट बैंक में इजराइल-फलस्तीन हिंसा के कुछ दिनों बाद हुई है। यह हिंसा बीते बृहस्पतिवार की शाम फलस्तीनी बंदूकधारी द्वारा यहूदी व्यक्ति की गोली मारकर हत्या करने के बाद भड़की थी। येहुदा डिमेंटमैन की मौत के बाद हुई हिंसा में कम से कम तीन फलस्तीनी घायल हो गए।

अमेरिका में कोरोना की नई लहर के बीच जो बाइडन ने बूस्टर डोज को बताया जरूरी

न्यूयॉर्क । कोरोना वायरस के नए वेरिएंट ओमिक्रॉन से दुनिया दहशत में है। ब्रिटेन, अमेरिका, यूएई समेत कई देशों में हालात बेकाबू रहे हैं। अलग-अलग देश महामारी से निपटने की अपने-अपने स्तर पर तैयारी कर रहे हैं। इस बीच अमेरिका में कोरोना की नई लहर शुरू हो चुकी है। इसलिए राष्ट्रपति जो बाइडन ने ओमिक्रॉन के संक्रमण से बचाव के लिए लोगों से बूस्टर डोज लेने की अपील की है। वहीं, अब लोगों के आरटी-पीसीआर टेस्ट मुफ्त में किए जाएंगे। अमेरिका के टेक्सास राज्य में कोरोना वायरस के नए ओमिक्रॉन वेरिएंट से एक मरीज की मौत हो गई, जो देश में संक्रमण के इस स्वरूप से मौत का पहला मामला है। स्वास्थ्य अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अमेरिका में ओमिक्रॉन से मौत का पहला मामला ऐसे दिन सामने आया है जब रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र (सीडीसी) ने कहा कि संक्रमण के अन्य स्वरूपों के मुकाबले ओमिक्रॉन के मामले बढ़ रहे हैं। देश में पिछले हफ्ते संक्रमण के 73 प्रतिशत नए मामले ओमीक्रोन के आए हैं। राष्ट्रपति जो बाइडन ने एक वीडियो संदेश में कहा जैसे ही बूस्टर डोज उपलब्ध हुई, मैंने उसे लगवा लिया। इसके ठीक अगले दिन ही पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप ने बताया कि उन्हें उनकी बूस्टर डोज मिल गई है। ये शायद उन कुछ चीजों में से एक है, जिसपर वो (ट्रंप) और मैं दोनों सहमत हैं। बूस्टर शॉट लेने वाले लोग बेहद सुरक्षित हैं। बाइडन ने लोगों से वैक्सीन लगवाने की अपील ऐसे समय पर की है, जब अमेरिका में नए ओमिक्रॉन वेरिएंट के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। न्यूयॉर्क के अधिकारियों ने शुक्रवार को 21,027 नए कोरोना मामले मिलने की जानकारी दी। यह संख्या महामारी के शुरूआती दिनों के बाद से सबसे अधिक है। उस समय टेस्ट की संख्या उतनी नहीं थी, जितनी की अब है। कोलंबिया विश्वविद्यालय में महामारी विज्ञान की प्रोफेसर डॉ वफा अल-सदर ने कहा अभी ओमिक्रॉन वेरिएंट देश के अन्य हिस्सों की तुलना में न्यूयॉर्क में अधिक लोगों को संक्रमित कर रहा है। उन्होंने कहा इस मायने में, यह मुझे मार्च 2020 की याद दिलाता है। हम इस देश में ओमिक्रॉन की पहली लहर को देख रहे हैं। जो न्यूयॉर्क में आई पिछली लहर जैसी है। हम अभी यह देख रहे हैं कि वेरिएंट आगे क्या करेगा। पिछले 14 दिनों में राज्य में वायरस के मामलों में 56 फीसदी वृद्धि हुई है। अस्पताल में भर्ती मरीजों की संख्या बीते दो साल में पीक के समय वाली दर से हालांकि कम है, लेकिन इसमें 25 प्रतिशत बढ़ोतरी देखी गई है।

सैन्य चौकी में घुस रहे फलस्तीनी व्यक्ति की इजराइली गोलीबारी में मौत

-आरोपी ने वाहन को वेस्ट बैंक में सैन्य चौकी में घुसाने की कोशिश की थी

रामल्ला। इजरायल में इजरायली सैनिकों ने एक फलस्तीनी व्यक्ति की हत्या कर दी, जिसने कथित तौर पर अपने वाहन को वेस्ट बैंक में एक सैन्य चौकी में घुसाने की कोशिश की थी। सेना के अधिकारियों के अनुसार, सैनिकों ने वाहन पर गोलियां चलाईं, जिसमें व्यक्ति की मौत हो गई और उसकी कार अनियंत्रित होकर एक सैन्य वाहन से टकरा गई और जेनिन के उत्तरी वेस्ट बैंक शहर के पास आग की लपटों में घिर गई। मृतक मारे गए फलस्तीनी की पहचान उजागर नहीं की गई, और इजराइली बलों में से किसी के भी घायल होने की कोई खबर नहीं है। घटना सप्ताहांत में वेस्ट बैंक में इजराइल-फलस्तीन हिंसा के कुछ दिनों बाद हुई है। यह हिंसा बीते गुरुवार की शाम फलस्तीनी बंदूकधारी द्वारा यहूदी व्यक्ति की गोली मारकर हत्या करने के बाद भड़की थी।

बीजिंग ओलंपिक के अखाड़े में कूटनीति का खेल, चीन के साथ पुतिन, ड्रैगन की निरंकुशता को यूरोपीय संघ की सीधी चुनौती

बीजिंग (एजेंसी)

चीन को बीजिंग ओलंपिक को लेकर डर लग रहा है। यूके, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया सभी ने राजनयिक बहिष्कार का ऐलान किया है। अमेरिका, ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया की तरह कनाडा ने भी मानवाधिकार चिंताओं के कारण ये फैसला लिया है। वहीं मानवाधिकार के मुद्दे को लेकर ओलंपिक खेलों का बहिष्कार झेल रहे चीन को रूस का साथ मिला है। रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने फरवरी में चीन में होने वाले विंटर ओलिंपिक के दौरान जिनपिंग से मुलाकात होने की संभावना जताई। पुतिन न केवल खेलों के उद्घाटन समारोह में शिरकत करेंगे, बल्कि इस दौरान चीनी राष्ट्रपति शी चिनफ्कग से उनकी बैठक भी होनी है। पुतिन के इस दांव के बाद शी ने भी नाटो से सुरक्षा की लिखित गारंटी संबंधी रूस की मांग का समर्थन किया है कि नाटो पूरब की ओर अपना विस्तार नहीं करे और यूक्रेन में हथियारों के जमावड़े से बचे। दरअसल रूस को इससे अपने लिए खतरे की आशंका है।

एंटी चाइना सेंटिमेंट्स फैलाया जा रहा- ग्लोबल टाइम्स

ग्लोबल टाइम्स ने लिखा है कि बीजिंग विंटर ओलंपिक से पहले जानबूझकर अमेरिका से एंटी चाइना सेंटिमेंट्स फैलाया जा रहा है। अमेरिकी सांसद दलाई लामा का मुद्दा उठाकर चीन पर दवाब बनाने की कोशिश कर रहे हैं। अमेरिकी सांसद बाइडेन-दलाई लामा की मुलाकात पर जोर देकर एंटी चाइना सेंटिमेंट्स को हवा दे रहे हैं। 2008 में भी ओलंपिक से पहले चीन के खिलाफ शिनजियांग को लेकर माहौल बनाया गया था।

चीन के समर्थन में खुलकर उतरा रूस

पुतिन ने कहा कि बीजिंग में होने वाले विंटर ओलंपिक में वो मौजूद होंगे। जिनपिंग से पुतिन ने खुलकर चीन का साथ देने का वादा किया है। शी जिनपिंग के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस में पुतिन ने बीजिंग ओलंपिक की ओपनिंग सेरेमनी में मौजूद होने का दावा किया है। दोनों नेताओं के बीच यह वार्ता तब हुई है, जब विभिन्न मसलों पर दोनों देशों के अमेरिका और उसके मित्र राष्ट्रों से तनावपूर्ण रिश्ते बने हुए हैं।

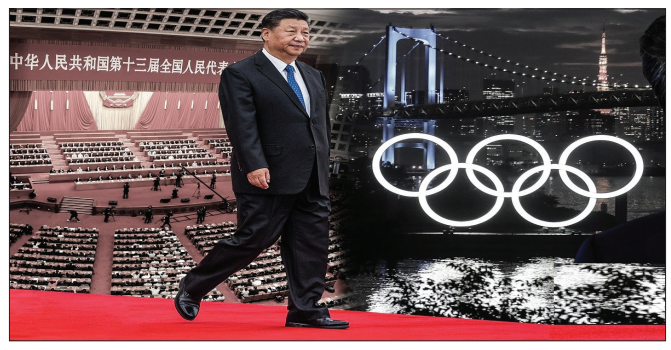

अमेरिका नहीं बल्कि रूस की राह पर भारत

चीन के साथ पिछले एक साल से ज्यादा वक्त से सरहद पर तनाव है और दोनों देशों के सैनिक आमने-सामने हैं। दोनों देशों के सैनिकों में हिंसक झड़प भी हो चुकी है और सैनिकों की मौत भी। ऐसे में माना ये जा रहा था कि भारत भी अमेरिका और अन्य यूरोपीय देशों की तरह ही चीन को लेकर कुछ इसी तरह का कदम उठाकर मानवाधिकार के

खिलाफ चीन को सख्त संदेश देगा। लेकिन इस सब से इतर भारत-चीन तनावपूर्ण संबंधों के बीच 2022 में बीजिंग में होने वाले शीतकालीन ओलंपिक और पैरा ओलंपिक में भारत ने समर्थन किया है। ब्रह्मा चेलानी ने ये सवाल खड़ा किया है कि कैसे हमारी सरकार बीजिंग विंटर ओलंपिक का समर्थन कर रही है। कैसे हमारे इसरो ने ओपो के साथ टाइअप कर रखा है।

बहरहाल, बीजिंग ओलंपिक के अखाड़े में जो कूटनीतिक खेल चल रहा है उसमें फिलहाल भारत ने चीन के साथ खड़ा होने की सोची है। लेकिन भारत का फाइनल स्टैंड एलएसी पर अगले दो-तीन महीनों में होने वाले घटनाक्रम उस पर निर्भर करेगा। बीजिंग में हम खेलने चले जाएं और वो हमारी सीमाओं पर खेलते रहे ऐसा संभव होना मुश्किल है।

अमेरिका के साथ टकराव से नहीं डरता चीन, विदेश मंत्री ने कहा- अंत तक लड़ेंगे

बीजिंग (एजेंसी)

चीन और अमेरिका के बीत बातचीत के कई प्रयास हो चुके हैं लेकिन दोनों देशों के बीच दशकों पुराने तनाव से रिश्तों की बर्फ पिघलती नहीं दिख रही है। नौबत यहां तक आ गई कि बौखलाहट में चीन ने अमेरिका से टकराव होने की स्थिति में अंत तक लड़ने की बात कह डाली। चीन के विदेश में मंत्री वांग यी ने एक भाषण में कहा कि चीन संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ टकराव से नहीं डरेगा और अंत तक लड़ेगा। सरकार की वेबसाइट के एक पोस्ट के अनुसार चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने कहा कि बीजिंग वाशिंगटन के साथ सहयोग का स्वागत करेगा, जब तक कि यह पारस्परिक रूप से लाभप्रद है।

कोरोना महामारी, व्यापार और मानवाधिकार, ताइवान और शिनजियांग जैसे मुद्दों को लेकर अमेरिका की तरफ से लगातार बीजिंग पर दबाव बढ़ाने की कोशिश की गई। दोनों देशों के बीच संबंध कई तरह की असहमति के स्तर पर हैं। पिछले साल वांग ने कहा कि 1979 में औपचारिक राजनयिक संबंधों की स्थापना के बाद से द्विपक्षीय संबंधों की उनकी सबसे खराब स्थिति की निंदा करने के लिए अमेरिका को दोषी ठहराया गया था।

अमेरिकी अधिकारियों पर प्रतिबंध

इससे पहले चीन ने अमेरिकी सरकार के अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग के चार सदस्यों पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की। बीजिंग ने देश के उत्तर-पश्चिमी शिनजियांग क्षेत्र में मानवाधिकार उल्लंघन के मुद्दे पर चीनी अधिकारियों पर अमेरिका द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के जवाब में यह कदम उठाया है। ये कदम शिनजियांग मुद्दे पर दोनों देशों के बीच बढ़ते तनाव को दशार्ते हैं। वाशिंगटन ने संबंधित क्षेत्र से आयात पर प्रतिबंध लगा दिया है, क्योंकि उसका मानना है कि आयात की जाने वाली चीजें-हो सकता है कि लोगों से जबरन मजदूरी कराकर तैयार की गई हों।

ओमीक्रोन पर बिल गेट्स की डराने वाली चेतावनी: दुनिया महामारी के सबसे बुरे दौर की तरफ बढ़ रही, मैंने छुट्टियां कैंसल कर दीं..

नई दिल्ली (एजेंसी)

माइक्रोसॉफ्ट के सह-संस्थापक बिल गेट्स ने लोगों से गंभीर रूप से बीमार होने से बचने के लिए जल्दी से अपना टीकाकरण करवाने का आग्रह किया है। उन्होंने आगाह किया कि ओमीक्रोन प्रकार के मामले बढ़ना ₹महामारी के सबसे बुरे हिस्सा₹ के रूप में उभर सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के मुताबिक कोरोना वायरस का ओमीक्रोन स्वरूप डेल्टा स्वरूप से तेजी से फैल रहा है और यह पहले से टीका लगवा चुके लोगों या कोविड-19 से उबर चुके लोगों में संक्रमण का कारण बन रहा है। गेट्स (66) ने मंगलवार को कहा, मुझे पता है कि कोविड के एक और मंडराते खतरे के बीच छुट्टियों के मौसम का आना निराशाजनक है। लेकिन यह हमेशा ऐसा नहीं रहेगा। किसी दिन महामारी समाप्त हो जाएगी, और बेहतर होगा कि हम एक-दूसरे की देखभाल करें। वह समय जल्दी आयेगा। अरबपति परोपकारी ने ट्वीट किया, जैसे ही लग रहा था कि जीवन सामान्य होने वाला है, अब हम वैश्विक महामारी के बुरे दौर में प्रवेश कर रहे हैं। ओमीक्रोन हम सबको प्रभावित करेगा। मेरे जिन करीब दोस्तों को अब संक्रमण हो गया है और मैंने अपनी छुट्टियों की ज्यादातर योजनाएं रद्द कर दी हैं। गेट्स की संस्था (बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन) कोविड-19 टीकों को विकसित करने और वितरित करने के प्रयास का हिस्सा रही है।

यूरोप में जल्द आने वाली है ओमिक्रॉन की 'सुनामी', जल्द लगाना लगाया जाना चाहिए बूस्टर डोज : डा क्लूज

वियना (एजेंसी)

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के शीर्ष अधिकारी ने यूरोपीय देशों की सरकारों को सावधान करते हुए कहा है कि अगर पर्याप्त सावधानी नहीं बरती गई तो यूरोपीय देशों में ओमीक्रोन की सुनामी आ सकती है। डब्ल्यूएचओ ने कोरोना के ओमिक्रॉन वेरिएंट से बचने के लिए वैक्सीन की बूस्टर डोज के व्यापक इंतजाम करने की सलाह दी है। डब्ल्यूएचओ के स्थानीय निदेशक डा हैंस क्लूज ने कहा कि कोरोना का ओमिक्रॉन वेरिएंट दुनियाभर के देशों में तेजी से लोगों को संक्रमित कर रहा है। भारत में ओमिक्रॉन के दो सौ से ज्यादा मामले सामने आ चुके हैं।

डॉ हैंस क्लूज ने वियना में संवाददाताओं से बात करते हुए कहा कि हम एक और तूफान को आते देख सकते हैं। क्लूज ने कहा, कुछ ही सप्ताह में ओमिक्रॉन यूरोप के और अधिक देशों में हावी हो जाएगा, जिसके चलते पहले ही बुरे दौर से गुजर रही स्वास्थ्य व्यवस्थाएं और प्रभावित होंगी। क्लूज ने कहा ओमिक्रॉन अब तक 38 देशों में पाया जा चुका है। ब्रिटेन, डेनमार्क और पुर्तगाल में यह पहले ही हावी हो चुका है। उन्होंने कहा पिछले सप्ताह क्षेत्र में कोरोना वायरस के चलते 27 हजार लोगों की मौत हुई और 26 लाख अतिरिक्त मामले सामने आए हैं। हालांकि इन मामलों में सभी स्वरूपों के संक्रमण के मामले शामिल हैं। उन्होंने कहा यह संख्या पिछले साल इसी अवधि की तुलना में 40 प्रतिशत अधिक है। क्लूज ने कहा, कोविड-19 मामलों की बढ़ती तादाद के परिणामस्वरूप और अधिक लोगों को अस्पतालों में भर्ती कराया जा सकता है। उन्होंने यूरोपीय देशों से अपने-अपने नागरिकों को जल्द से जल्द बूस्टर डोज देने की अपील की है। उन्होंने कहा ओमिक्रॉन से बचने का एकमात्र उपाय है वैक्सीन की बूस्टर डोज। क्लूज ने कहा अब तक यूरोप में ओमिक्रॉन के शुरूआती मामलों में से 89 फीसदी केस आम कोविड-19 लक्षणों जैसे खांसी, गले में खराश और बुखार से जुड़े थे। उन्होंने कहा कि 20 से 30 साल की उम्र के लोगों में ये वैरिएंट ज्यादा हमला कर रहा है। अभी तक देखा गया है कि ज्यादातर केस वहां बिगड़े हैं, जहां ज्यादा सभाएं हो रही हैं।

लिव-इन रिलेशनशिप से बैन हटाने से शराब पर प्रतिबंधों में ढील तक, इमेज बिल्डिंग में लगा यूएई, एडल्ट फिल्मों को लेकर लिया ये फैसला

नयी दिल्ली (एजेंसी)

लिव-इन रिलेशनशिप से प्रतिबंध हटाने, शराब पर प्रतिबंधों में ढील, गोल्डेन वीजा की शुरूआत और तबलीगी जमात पर बैन लगाने वाली सऊदी अरब ने अब अपनी उदार छवि पेश करने की एक और कोशिश की है। संयुक्त अरब अमीरात ने रविवार को घोषणा की कि वह अब सिनेमाई रिलीज को सेंसर नहीं करेगा, यानि, अब देश के 21 साल की उम्र के ऊपर के दर्शक किसी भी तरह की फिल्म देख सकते हैं। गल्फ कंट्री की तरफ से अपने देश में सभ्य समाज का निर्माण किए जाने और ऐसा देश जहां हर वर्ग, हर मजहब के लिए आजादी हो कुछ इस तरह की इमेज बिल्डिंग में लगा है। आईजीएन मिडिल ईस्ट के अनुसार, हाल ही में, एडम ड्राइवर और लेडी गागा स्टारर 'हाउस ऑफ गुच्ची' को अपनी यौन सामग्री के कारण कई कट मिले, जबकि मार्वल स्टूडियोज के 'एटरनल' की रिलीज में इसी तरह के कारणों से देरी हुई। लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि क्या

इस तरह की फिल्मों को नए रेटिंग सिस्टम के तहत फिर से रिलीज किया जाएगा।

फिल्म देखने वालों के लिए क्या बदलाव हैं?

संस्कृति और युवा मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले देश के मीडिया नियामक कार्यालय ने ट्विटर के माध्यम से सूचित किया कि वो अपने मोशन पिक्चर कंटेंट रेटिंग सिस्टम के भीतर 21+ आयु वर्ग की शुरूआत कर रहा है। घोषणा के मुताबिक, इस वर्गीकरण के अनुसार, अब फिल्मों में दृश्यों को काटकर नहीं हटाए जाएंगे, बल्कि इसके जगह पर 21+ उम्र के दर्शक सीधे सिनेमा हॉल में इस तरह की फिल्में देख सकते हैं।

उदार छवि पेश करने की कोशिश

सात अमीरातों का एक संघ, संयुक्त अरब अमीरात ने हाल ही में 2 दिसंबर को अपनी स्थापना के 50 साल पूरे होने का जश्न मनाया है। बहुत बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लोग संयुक्त अरब अमीरात में रहते हैं और काम करते हैं, और दोनों देशों के बीच घनिष्ठ व्यापार और राजनयिक संबंध हैं। पिछले साल, संयुक्त अरब अमीरात ने इजराइल के साथ संबंधों को सामान्य किया, ऐसा करने वाला तीसरा अरब राष्ट्र बन गया। 2019 में यूएई ने विदेशी नागरिकों को आकर्षित करने के लिए ₹गोल्डन वीजा₹ शुरू किया था। गोल्डन वीजा होल्डर्स यूएई में बिना किसी स्पॉन्सर के रह सकते हैं, पढ़ाई कर सकते हैं और नौकरी कर सकते हैं। इसके अलावा पिछले साल के अंत में यूएई में लिव-इन को मान्यता दिए जाने पर खूब चर्चा हुई थी।

10 साल बाद पाकिस्तान-ईरान और तुर्की को जोड़ने वाली मालगाड़ी सेवा शुरू

इस्लामाबाद: पाकिस्तान, ईरान और तुर्की को जोड़ने वाली एक मालगाड़ी सेवा क्षेत्रीय संपर्क में सुधार और तीनों देशों के बीच व्यापार क्षमता को बढ़ावा देने के लिए फिर से शुरू की गई है। यह सेवा, 10 से अधिक वर्षों तक निलंबित रही। यह जानकारी बुधवार को मीडिया की खबर से मिली। तीनों देशों की योजना भविष्य में इसी मार्ग पर एक यात्री रेल सेवा शुरू करने की भी है। पाकिस्तान के रेल मंत्री आजम खान स्वाति ने विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी और प्रधानमंत्री के वाणिज्य सलाहकार अब्दुल रजाक दाऊद के साथ मंगलवार को यहां मार्गल्ला रेलवे स्टेशन पर इस्लामाबाद-तेहरान-इस्तांबुल (क्ळक) मालगाड़ी शुरू की। इस अवसर पर तुर्की, ईरान, कजाकिस्तान और उज्बेकिस्तान के राजदूत भी मौजूद थे। रेलवे के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि क्ळकमालगाड़ी का हर मंगलवार को परिचालन होगा जो इस्लामाबाद में मार्गल्ला रेलवे स्टेशन से अपना सफर शुरू करके ईरान के जाहेदन में पहली मंजिल की तरफ बढ़ेगी और फिर इस्तांबुल जाएगी। इस्लामाबाद से इस्तांबुल के लिए पहली ट्रेन का उद्घाटन 14 अगस्त 2009 को हुआ था। पाकिस्तान रेलवे के अनुसार इसी तरह, इस्तांबुल से पहली खेप 13 अगस्त, 2010 को इस्लामाबाद पहुंची। अब तक, पाकिस्तान से तुर्की के लिए आठ ट्रेनें भेजी गई हैं, जिनमें से आखिरी 5 नवंबर, 2011 को लाहौर से रवाना हुई थी।

ब्रिटेन में ओमीक्रोन से 14 मौतें, यूरोपीय देशों में सख्ती व नीदरलैंड ने लगाया लॉकडाउन

लंदन: (एजेंसी)

दुनिया भर में कोरोना के नए वैरिएंट ओमीक्रोन के मामले तेजी से फैल रहे है। ब्रिटेन और अमेरिका फिर एक बार कोरोना का कहर झेल रहे हैं। इस नए वैरिएंट का जाल क्रिसमस से पहले ही दुनिया को बड़ी तेजी से फैल रहा है। करीब 92 देशों में दस्तक के बीच यह वैरिएंट यूरोप के अधिकांश देशों में फैलना चुका है जबकि ब्रिटेन में इससे 14 लोगों की मौत हो चुकी है । इस बीच यूरोपीय देशों में सख्ती व नीदरलैंड ने लॉकडाउन लागू हो गया है।

ब्रिटेन में क्रिसमस के बाद लॉकडाउन की तैयारी

ब्रिटिश स्वास्थ्य राज्य मंत्री गिलियान कीगन के अनुसार ब्रिटेन में ओमीक्रोन से पीड़ित 129 लोगों को अस्पताल में भर्ती हैं और अब तक 14 लोगों की मौत हो चुकी है। ब्रिटेन के स्वास्थ्य राज्य मंत्री गिलियान ने यह भी कहा है कि यदि डेटा बढ़ता रहा तो फिर सरकार कोरोना के सख्त प्रतिबंध लगाने से पीछे नहीं हटेगी। ब्रिटेन में ओमिक्रॉन वैरिएंट के एक दिन में 12,133 मामलों को देखते हुए ब्रिटिश कैबिनेट ने सोमवार को सख्त लॉकडाउन प्रतिबंधों के विकल्पों पर विचार किया। ब्रिटेन में ओमिक्रॉन के अब तक 37,101 मामलों की पुष्टि हो चुकी है। संभावना है कि ब्रिटेन में क्रिसमस के बाद दो सप्ताह का लॉकडाउन लगाया जाएगा।

जर्मनी और फ्रांस ने भी इस वैरिएंट से बचाव के लिए सख्ती शुरू

जर्मनी और फ्रांस ने भी इस वैरिएंट से बचाव के लिए सख्ती शुरू कर दी है। ब्रिटेन और यूरोपीय देशों में क्रिसमस से ठीक पहले त्यौहार की भीड़ रोकने और नए वैरिएंट को फैलने से रोकने के तहत प्रतिबंधात्मक उपाय किए जा रहे हैं। नीदरलैंड में सख्त लॉकडाउन लागू हो गया है।

इस्राइल ने यात्रा प्रतिबंध सूची में अमेरिका, कनाडा व जर्मनी समेत 10 देश जोड़े

इस्राइल ने सोमवार को ओमिक्रॉन वैरिएंट के प्रसार को देखते हुए अमेरिका, कनाडा और जर्मनी समेत 10 देशों को अपनी नो-फ्लाई सूची में जोड़ते हुए यात्रा प्रतिबंध लगा दिए हैं। इस संबंध में देश के भीतर 175 लोगों के ओमिक्रॉन वैरिएंट से संक्रमित होने का हवाला दिया गया। यात्रा प्रतिबंध की सूची में शामिल अन्य देश बेल्जियम, कनाडा, जर्मनी, हंगरी, इटली, मोरक्को, पुर्तगाल, स्विट्जरलैंड और तुर्की हैं। इसके साथ ही अमेरिका उन यूरोपीय देशों और अन्य देशों की सूची में शामिल हो गया है, जहां इस्राइली नागरिकों के यात्रा करने पर पाबंदी है और इन देशों से आने वाले यात्रियों को पृथक वास में रहना होगा।

अफ्रीका में 91.55 पार हुए कोरोना मामले

अफ्रीकी सेंटर फॉर डिसीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (अफ्रीका सीडीसी) ने कहा है कि क्षेत्र में कोविड-19 के मामले 91.55 लाख तक हो गए हैं जबकि महाद्वीप में मरने वालों की संख्या 2.25 लाख तक हो गई है। अफ्रीका सीडीसी ने कहा, दक्षिण अफ्रीका, मोरक्को, ट्यूनीशिया और इथियोपिया इस महाद्वीप पर सबसे ज्यादा मामले वाले देशों में से हैं।

सिंगापुर ने यहां चांगी हवाई अड्डे पर बढ़ाई सुरक्षा

उधर, विदेशों में ओमीक्रोन स्वरूप के तेजी से प्रसार के बीच सिंगापुर ने यहां चांगी हवाई अड्डे पर आ रहे यात्रियों के सम्पर्क में आने वाले हवाई अड्डे के सभी कर्मचारियों के लिए सुरक्षा उपाय बढ़ा दिये हैं। यह जानकारी देश के नागरिक उड्डयन प्राधिकरण ने बुधवार को दी। सिंगापुर के नागरिक उड्डयन प्राधिकरण के अनुसार, हवाई अड्डे के कर्मचारी जो यात्रियों के सम्पर्क में आते हैं, यहां तक कि टैक्सी स्टैंड जैसे सार्वजनिक क्षेत्रों में भी, उन्हें एन 95 मास्क और फेस शील्ड सहित व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों का इस्तेमाल करना चाहिए।

स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा, कई देशों या क्षेत्रों में इस स्वरूप के तेजी से फैलने के कारण हम ओमीक्रोन के बारे में अधिक सतर्कता बरत रहे हैं। सिंगापुर के विमानों के चालक दल के सदस्यों को सात-दिवसीय पीसीआर आरआरटी व्यवस्था से गुजरना होगा, जबकि चक्र के तीसरे दिन नियोक्ता-पर्यवेक्षित एआरटी भी की जाएगी। इस बीच, सिंगापुर में मंगलवार दोपहर तक कोविड-19 के 280 नये मामले सामने आये और दो मरीजों की मौत हुई।

केंद्र ने कहा-जिला एवं स्थानीय स्तर पर सख्त रोकथाम व्यवस्था बनाएं

डेल्टा से तीन गुना संक्रामक है ओमीक्रोन, संचालन केंद्र करें सक्रिय

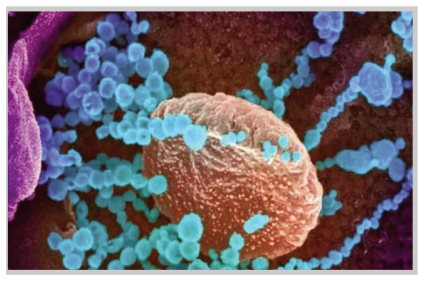

नई दिल्ली (एजेंसी)।

केंद्र ने राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से कहा है कि कोरोना का ओमीक्रोन स्वरूप डेल्टा की तुलना में कम से कम तीन गुना अधिक संक्रामक है और आपातकालीन संचालन केंद्रों को सक्रिय किए जाने के साथ ही जिला एवं स्थानीय स्तर पर सख्त एवं त्वरित रोकथाम कार्रवाई की जानी चाहिए। पत्र में, केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव राजेश भूषण ने परीक्षण और निगरानी बढ़ाने के अलावा रात में कर्फ्यू लगाने, बड़ी सभाओं का सख्त नियमन, शादियों और अंतिम संस्कार कार्यक्रमों में लोगों की संख्या कम करने जैसे रणनीतिक निर्णय को लागू करने की सलाह दी। पत्र में उन उपायों पर प्रकाश डाला गया है, जिन्हें देश के विभिन्न हिस्सों में कोविड-19 के मामलों में वृद्धि के शुरुआती संकेतों के साथ-साथ चिंता बढ़ाने वाले स्वरूप ओमीक्रोन का पता लगाने के लिए उठाए जाने की आवश्यकता है। पत्र में कहा गया है, ''जिला स्तर पर कोविड-19 से प्रभावित जनसंख्या, भौगोलिक प्रसार, अस्पताल के बुनियादी ढांचे और इसके उपयोग, श्रमशक्ति, निषिद्ध क्षेत्र अधिसूचित करने, निषिद्ध क्षेत्रों की परिधि लागू करने आदि के संबंध में उभरते आंकड़ों की निरंतर समीक्षा होनी चाहिए। यह साक्ष्य जिला स्तर पर ही प्रभावी निर्णय लेने का आधार होना चाहिए।'' भूषण ने पत्र में कहा, इस तरह की रणनीति यह सुनिश्चित करती है कि संक्रमण राज्य के अन्य हिस्सों में फैलने से पहले स्थानीय स्तर पर ही नियंत्रित हो जाए। उन्होंने कहा, ''कृपया वार रूम, ईओसी (आपातकालीन संचालन केंद्र) को सक्रिय करें और सभी स्थिति तथा वृद्धि का विश्लेषण करते रहें, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो और जिला,स्थानीय स्तर पर सक्रिय कार्रवाई करें। क्षेत्र के अधिकारियों के साथ नियमित समीक्षा और इस संबंध में सक्रिय कार्रवाई निश्चित रूप से संक्रमण के प्रसार को नियंत्रित करेगी।'' भूषण ने कहा कि कोविड पॉजिटिव मामलों के सभी नए समूहों के मामले में, निषिद्ध क्षेत्र, बफ़र ज़ोन की त्वरित अधिसूचना की जानी चाहिए और मौजूदा दिशानिर्देशों के अनुसार निषिद्ध क्षेत्र की परिधि पर सख्त नियंत्रण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। भूषण ने रेखांकित किया कि सभी क्लस्टर नमूनों को जीनोम अनुक्रमण के लिए इंसाकॉग प्रयोगशालाओं को बिना किसी देरी के भेजा जाना चाहिए। पत्र में अन्य कदमों और कार्रवाइयों का भी जिक्र किया गया है।

यूपी में फिर से सिर उठा रहा कोरोना, योगी ने बैठक पर अधिकारियों को दिए सख्त निर्देश

लखनऊ (एजेंसी) ।

देश-दुनिया में ओमिक्रॉन की दहशत के बीच फिर से यूपी में कोरोना सिर उठाने लगा है।यूपी में कोरोना ने फिर से रफ्तार पकड़नी शुरू कर दी है।बीते 24 घंटे में राज्य में कोरोना के 23 नए मामले सामने आए हैं, जिससे एक बार फिर योगी सरकार हरकत में आ गई है।कोरोना के बढ़ते मामलों को देखकर योगी सरकार ने अस्पतालों में बेडों की संख्या दोगुने करने के निर्देश दिए हैं।फिलहाल, उत्तर प्रदेश में कोरोना के सक्रिय केसों की संख्या 211 है।कोरोना के बढ़ते मामलों के बीच मुख्यमंत्री योगी ने अपने सरकारी आवास पर कोविड-19 की स्थिति को लेकर एक समीक्षा बैठक की। बैठक के दौरान मुख्यमंत्री योगी ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि बुंदेलखंड क्षेत्र के झांसी, चित्रकूट, महोबा आदि जिलों में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराए। इतना ही नहीं, योगी ने इन जिलों में बेहतर स्वास्थ्य सुविधा के लिए सरकारी अस्पतालों में बेडों की संख्या 100 से 200 करने के आदेश दिए। सीएम योगी ने बैठक में मौजूद अधिकारियों को निर्देश दिया कि कोरोना प्रोटोकॉल का पूरी तरह से पालन होना चाहिए और संक्रमण से बचाव और उपचार की व्यवस्थाओं को बेहतर किया जाना चाहिए।साथ ही उन्होंने उत्तर प्रदेश में शीतलहर को देखकर रैन बसेरों को बेहतर तरीके से चलाए जाने के भी निर्देश दिए।

उन्होंने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि कोई भी खुले में न सोने पाए, उन्होंने इसके लिए पुलिस और प्रशासन को विशेष तौर पर रैन बसेरों का ध्यान रखने को कह दिया हैं।

देशभर में चीनी मोबाइल कंपनियों के दफ्तरों और गोदामों पर इनकम टैक्स ने डाली रेड

नई दिल्ली (एजेंसी)।

आयकर विभाग ने देश के कई हिस्सों में चीनी मोबाइल कंपनियों से जुड़ी जगहों पर छापेमारी की। आईटी अधिकारियों ने बुधवार सुबह से छापेमारी शुरू की। कथित गड़बड़ियों का पता लगने के बाद इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने यह कदम उठाया है। सूत्रों के मुताबिक कई मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स, कॉरपोरेट दफ्तरों और गोदामों में छापेमारी जारी है। इस साल अगस्त में उपकरण बनाने वाली चीनी कंपनी जेटीई पर गुरुग्राम में इनकम टैक्स की रेड पड़ी थी। उनके इंडिया चीफ से भी आईडी डिपार्टमेंट ने पूछताछ की थी। सूत्रों के मुताबिक डिपार्टमेंट ने कई टैक्स उल्लंघनों का पता लगाया था। हाल ही में मोबाइल फोन, लोन एप्लिकेशन और ट्रांसपोर्ट बिजनेस में शामिल कई चीनी कंपनियों पर केंद्रीय जांच एजेंसियों ने रेड डाली थी।

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश की पत्नी और बेटी कोरोना संक्रमित

लखनऊ (एजेंसी)।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की पत्नी और पूर्व सांसद डिंपल यादव और बेटी टीना कोरोना संक्रमित हुई हैं। डिप्टी सीएमओ मिलिंद वर्धन ने बुधवार को इसकी पुष्टि की है।मिलिंद ने बताया कि डिंपल यादव और उनकी बेटी टीना को कोई सिम्प्टम नहीं है।फिलहाल दोनों होम आइसोलेशन में हैं। गौरतलब है कि दूसरी लहर के दौरान अखिलेश भी पॉजिटिव हुए थे।हालांकि, कुछ एहतियात बरतने के बाद उनकी रिपोर्ट निगेटिव आ गई थी।बता दें कि देश-दुनिया में ओमिक्रॉन की दहशत के बीच एक बार फिर से उत्तर प्रदेश में कोरोना सिर उठाने लगा है।बीते 24 घंटे में राज्य में कोरोना के 23 नए मामले सामने आए हैं, जिससे एक बार फिर योगी सरकार हरकत में आ गई है।

आबकारी नीति के विरोध में भाजपा ने शुरू किया हस्ताक्षर अभियान, लेखी बोलीं इससे बढ़ेंगी दिक्कतें : लेखी

नई दिल्ली (एजेंसी)।

केन्द्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी ने बुधवार को आम आदमी पार्टी (आप) सरकार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि आप सरकार राशन की दुकानें खोलने में नाकाम रही और अब शहर भर में शराब की दुकानें खोल रही है। अरविंद केजरीवाल सरकार की नई आबकारी नीति के खिलाफ दिल्ली में भाजपा के हस्ताक्षर अभियान में हिस्सा लेते हुए, भाजपा सांसद लेखी ने कहा शराब की निजी दुकानें खोलने की अनुमति देने से दिल्ली सरकार के राजस्व पर असर पड़ेगा। लेखी ने कहा केजरीवाल सरकार ने न तो राशन की कोई नई दुकान खोली है और न ही नए राशन कार्ड जारी किए हैं, लेकिन पूरे शहर में शराब की दुकानें खोल रही है। इसके हानिकारक प्रभाव होंगे, क्योंकि इससे शराब की लत से फंस कर लोगों के परिवार टूट जाएंगे। भाजपा की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष आदेश गुप्ता ने कहा कि उनकी पार्टी के कार्यकर्ता 'आप' सरकार की आबकारी नीति का कई सप्ताह से विरोध कर रहे हैं और इसे वापस लिए जाने तक इसका विरोध जारी रखेंगे। गुप्ता ने कहा कि दिल्ली के लोग, समान वितरण के नाम पर शहर भर में शराब की 850 दुकान खोलने की इस नीति से नाखुश हैं। क्या ऐसा करने की कोई जरूरत है? केजरीवाल सरकार पानी के समान वितरण, स्वास्थ्य तथा शिक्षा के क्षेत्र में सुधार और यमुना नदी की सफाई के लिए काम क्यों नहीं करती? उन्होंने कहा भाजपा के महिला मोर्चा के नेतृत्व वाले अभियान के तहत आने वाले आठ से 10 दिनों में 15 लाख लोगों के हस्ताक्षर लिए जाएंगे। गुप्ता ने कहा हस्ताक्षरों की सूची भारत के राष्ट्रपति को सौंपी जाएगी और उनसे दिल्ली सरकार की आबकारी नीति को वापस लेने के लिए हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया जाएगा।

मुंबई पुलिस के समक्ष पेश नहीं हुईं अभिनेत्री कंगना रनौत, वकील ने मांगी नई तारीख

नई दिल्ली (एजेंसी) ।

बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत बुधवार को मुंबई पुलिस के समक्ष पेश नहीं हुईं। बालीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत को उस पोस्ट को लेकर, पुलिस के समक्ष पेश होना था, जिसमें उन्होंने किसानों के आंदोलन को खालिस्तानी आंदोलन से जोड़ा था।

एक सिख संगठन की शिकायत के बाद पिछले महीने खार पुलिस थाने में अभिनेत्री कंगना रनौत के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई थी। पुलिस ने इस माह की शुरुआत में उन्हें पूछताछ के लिए नोटिस जारी किया था। कंगना रनौत के वकील ने बांबे हाईकोर्ट को बताया था कि वह 22 दिसंबर को खार पुलिस के समक्ष पेश होंगी। कंगना रनौत के वकील ने पेश होने के लिए दूसरी तारीख दिए जाने का बुधवार को अनुरोध किया। कगना रनौत के वकील रिजवान सिद्दीकी ने कहा उच्च न्यायालय के आदेश की भावना, उद्देश्य और मंशा के अनुसार, हमने जांच अधिकारी से एक पहले की तारीख का अनुरोध किया और हम अदालत की अगली सुनवाई से पहले प्रक्रिया में तेजी लाना चाहते थे। जांच अधिकारी हमें समायोजित करने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने न मेरे फोन कॉल का जवाब दिया और न संदेशों का, उन्होंने उस पत्र का भी कोई जवाब नहीं दिया जो उन्हें आदेश के तुरंत बाद भेजा गया था। उन्होंने कहा अब मेरी मुवक्किल उपलब्ध किसी अन्य निकट तिथि पर उनके सामने पेश होंगी। यदि अधिकारी हमें समय नहीं देते हैं, तो हम इस मामले को फैसला हाईकोर्ट पर छोड़ देंगे जो इसके गुण-दोष के आधार निर्णय करेगा। मुंबई पुलिस ने इससे पहले बम्बई उच्च न्यायालय को बताया था कि वह 25 जनवरी, 2022 तक कंगना रनौत को उनकी सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर गिरफ्तार नहीं करेगी, जिसमें किसानों के विरोध प्रदर्शन को कथित तौर पर एक अलगाववादी समूह से जोड़ा गया था। पुलिस का यह बयान तब आया जब हाईकोर्ट ने कहा कि इस मुद्दे में कंगना रनौत की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार का बड़ा सवाल शामिल है और अदालत को उन्हें कुछ अंतरिम राहत देनी होगी। रनौत ने इस महीने की शुरुआत में हाईकोर्ट का रुख किया था और अपने खिलाफ खार पुलिस थाने में दर्ज प्राथमिकी रद्द करने का अनुरोध किया था।

अभिनेत्री के खिलाफ प्राथमिकी एक सिख निकाय के कुछ सदस्यों की शिकायत के बाद दर्ज की गई थी, जिसमें दावा किया गया है कि रनौत ने अपनी इंस्टाग्राम पोस्ट के माध्यम से दिल्ली की सीमाओं पर किसानों के आंदोलन को खालिस्तानी आंदोलन के रूप में पेश किया है।

सर्जरी के बाद सीएम ठाकरे कर रहे स्वस्थ्य लाभ, घर से ही ले रहे मंत्रिमंडल की बैठकों में हिस्सा : आदित्य

महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे की तबीयत पर सियासत तेज, पाटिल ने दी नसीहत किसी और को सौंपे प्रभार

मुंबई (एजेंसी)।

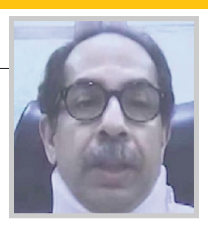

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की तबीयत को लेकर सियासत तेज हो गई है। प्रदेश भाजपा इकाई के अध्यक्ष चंद्रकांत दादा पाटिल ने बुधवार को मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को नसीहत दी है। उन्होंने कहा कि स्वस्थ होने तक सीएम उद्धव ठाकरे को अपनी जिम्मेदारियां किसी और को सौंप देनी चाहिए। उन्होंने कहा राज्य विधानसभा के शीतकालीन सत्र के दौरान उनकी अनुपस्थिति अनुचित है। दरअसल, महाराष्ट्र विधानसभा का शीतकालीन सत्र आज से शुरू हो गया है और सत्र से पहले चंद्रकांत दादा पाटिल ने यह बयान दिया। इस बीच, आदित्य ठाकरे ने मुख्यमंत्री बदलने की संभावना को खारिज करते हुए कहा कि पिता उद्धव ठाकरे एकदम स्वस्थ्य हैं। आपको बता दें कि मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की हाल ही में गर्दन की हड्डी की सर्जरी हुई थी, जिसकी वजह से वह तीन हफ्ते तक अस्पताल में भर्ती रहे। अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद से वह अपने आधिकारिक आवास 'वर्षा' से मंत्रिमंडल की सभी बैठकों में ऑनलाइन हिस्सा ले रहे हैं। इतना ही नहीं, शीतकालीन सत्र की शुरुआत की पूर्व संध्या को मुख्यमंत्री विधायकों की चाय पार्टी में शामिल हुए थे। चंद्रकांत दादा पाटिल ने कहा मुख्यमंत्री को अपने स्वास्थ्य को देखते हुए, शिवसेना या परिवार में से किसी को अपना प्रभार सौंप देना चाहिए। भाजपा नेता ने कहा उन्हें कांग्रेस और एनसीपी पर भरोसा नहीं है तो वह अपने बेटे एवं राज्य मंत्री आदित्य ठाकरे को कार्यभार सौंप सकते हैं। गौरतलब है कि महाराष्ट्र विधानसभा का शीतकालीन सत्र शुरू हो चुका है और भाजपा महाविकास अघाड़ी सरकार को घेरने की कोशिशों में जुटी हुई है। भाजपा नेता देवेंद्र फडनवीस और चंद्रकांत पाटिल के नेतृत्व में पार्टी के विधायकों ने मुंबई में टीईटी पेपर लीक, ओबीसी आरक्षण सहित विभिन्न मुद्दों को लेकर महाविकास अघाड़ी सरकार के खिलाफ विधानसभा में विरोध प्रदर्शन किया।

गोवा में केजरीवाल का दावा, भ्रष्ट्राचार करने पर विधायक को भी बख्शा नहीं जाएगा

टीएमसी गोवा चुनाव में ही नहीं दिख रही

पणजी (एजेंसी)।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि गोवा में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों में यदि आप सत्ता में आती हैं, तब राज्य में भ्रष्टाचार मुक्त और ईमानदार' सरकार देगी। केजरीवाल ने कहा कि आप की दिल्ली सरकार के पिछले रिकॉर्ड के आधार पर यह गारंटी दी गई है जहां उसके ही मंत्री को दुकानदार से रिश्वत मांगने के आरोप में पद से हटा दिया गया था।केजरीवाल ने कहा कि यदि मंत्री या विधायक रिश्वत मांगते मिलते हैं,तब उन्हें दंड से बख्शा नहीं जाएगा।उन्होंने दावा किया, हम गोवा में पहली भ्रष्टाचार मुक्त और ईमानदार सरकार दे सकते हैं। केजरीवाल ने कहा कि अगर आप गोवा में सत्ता में आती है,तब उसकी सरकार घर-घर जाकर सेवाएं मुहैया कराकर छोटे स्तर के भ्रष्टाचार को खत्म करेगी। उन्होंने कहा,हमारी सरकार ने पहले ही दिल्ली में सेवाओं को घर पर मुहैया कराना शुरू कर दिया है। सभी सरकारी सेवाएं आपके दरवाजे पर उपलब्ध होंगी। उन्होंने कहा कि दिल्ली में सरकारी अधिकारी दस्तावेज लेने के लिए आवेदक के आवास पर जाते हैं और इसी तरह की व्यवस्था गोवा में भी शुरू होगी। उन्होंने कहा, आपके पंचायत के काम से लेकर मुख्यमंत्री से सहायता तक, सब कुछ आपके दरवाजे पर उपलब्ध होगा।आप नेता ने दावा किया कि यदि उनकी पार्टी गोवा में सत्ता में आती है,तब लोगों को एक महीने के भीतर सरकार के कामकाज के तरीके में भारी बदलाव देखने को मिलेगा।उन्होंने कहा कि सरकार राज्य में औद्योगिक घरानों को व्यवसाय चलाने में भी मदद करेगी। केजरीवाल ने कहा कि आप सरकार तटीय राज्य को छोड़ चुके उद्योगों को सभी आवश्यक सहायता प्रदान करके उन्हें फिर से राज्य में वापस लाने के लिए सुविधा प्रदान करेगी।वहीं तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के साथ चुनाव पूर्व गठबंधन पर उन्होंने दावा किया कि ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली पार्टी 'दौड़ में भी नहीं है।केजरीवाल से टीएमसी पर उनकी चुप्पी के बारे में पूछा गया,तब उन्होंने कहा, 'देश में 1,350 पार्टियां हैं, क्या मुझे सभी का जिक्र करना शुरू कर देना चाहिए। केजरीवाल ने कहा कि टीएमसी के पास एक फीसदी वोट हिस्सेदारी भी नहीं है। उन्होंने कहा, आप केवल पोस्टरों के आधार पर चुनाव नहीं जीत सकते।

आपको काम करने और वोट मांगते समय अपनी उपलब्धि को लोगों तक ले जाने की जरूरत होती हैं। आप ने 2017 में भी गोवा विधानसभा चुनाव लड़ा था, लेकिन 40 सदस्यीय सदन में एक भी सीट नहीं जीत सकी थी। टीएमसी ने घोषणा की है कि वह गोवा में आगामी चुनावों में सभी 40 सीटों पर चुनाव लड़ेगी।

संक्षिप्त समाचार

आपराधिक रिकॉर्ड वाला प्रत्याशी उतारा तो देनी होगी जानकारी, बताना होगा क्यों बनाया प्रत्याशी

पणजी। मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) सुशील चंद्रा ने बताया कि चुनाव के दौरान सभी मतदाताओं को विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रत्याशियों के बारे में सबकुछ पता होना चाहिए। राजनीतिक पार्टियों को अखबारों, टेलीविजन और वेबसाइटों के जरिए मतदाताओं तक प्रत्याशियों से जुड़ी जानकारी पहुंचानी होगी। ज्ञात हो कि अगले साल की शुरुआत में देश के पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। चुनाव आयोग ने विधानसभा चुनाव की तैयारियां शुरू कर दी हैं। चुनाव आयोग के अफसर सभी राज्यों में जाकर वहां की स्थिति की समीक्षा कर रहे हैं। इस बीच, मुख्य चुनाव आयुक्त सुशील चंद्रा और आयुक्त राजीव कुमार और अनूप चंद्र दो दिवसीय दौरे पर गोवा पहुंचे हैं। यहां मुख्य चुनाव आयुक्त सुशील चंद्रा ने बताया मतदाताओं को उम्मीदवार के बारे में सारी जानकारी मिलनी चाहिए। राजनीतिक पार्टियों को अखबार, टीवी और वेबसाइट पर बताना होगा कि उनके उम्मीदवार का क्रिमिनल रिकॉर्ड है या नहीं, अगर है तो राजनीतिक पार्टियां मतदाताओं को वह वजह भी बताएं जिसके कारण एक साफ छवि वाले उम्मीदवार की बजाय आपराधिक रिकॉर्ड वाले कैंडिडेट को चुना जा रहा है। सीईसी चंद्रा ने इसके आगे बताया कि राज्य के सीमावर्ती इलाकों पर कड़ी निगरानी रखी जाएगी। इतना ही नहीं सभी बैंकों को भी निर्देश दिए गए हैं कि अगर कोई लेन-देन संदिग्ध लगे तो तुरंत उसकी जानकारी दी जाए।

जालंधर में पंजाब नेशनल बैंक से 17 लाख की लूट, पुलिस जांच में जुटी

चंडीगढ़ । जालंधर में बुधवार की सुबह बैंक खुलते ही बैंक डकैती की वारदात सामने आई है। लुटेरों ने पंजाब नेशनल बैंक की शाखा में सुबह करीब 9.30 बजे डकैती को अंजाम दिया। आरोपी गन प्वाइंट पर लगभग 17 लाख रुपये की लूट कर फरार हो गए। पुलिस ने बैंक लुटेरों को पकड़ने के लिए रेड अलर्ट जारी कर शहर से बाहर जाने वाले सभी रास्तों को सील कर दिया है।जानकारी के अनुसार चार नकाबपोश लुटेरे पीएनबी ग्रीन मॉडल टाउन शाखा में सुबह 9.30 से 9.45 बजे के बीच अंदर घुसे और जब कैशियर दिन के कारोबार के लिए कैश काउंटर तैयार करने में व्यस्त था। लुटेरों ने बंदूक की नोक पर कैशियर से नकदी छीन कर फरार हो गए।लुटेरे भागने से पहले बैंक में लगे सीसीटीवी कैमरे में घटना की रिकॉर्डिंग के लिए लगे डीवीआर भी अपने साथ ले गए। बैंक अधिकारियों का कहना है, कि लुटेरों के पास देसी कट्टे और धारदार हथियार थे। पुलिस बैंक के आसपास के सीसीटीवी कैमरों को भी खंगाल रही है। इसके अलावा बैंक में कुछ खुफिया कैमरे भी लगे हैं। जिनकी फुटेज भी चेक कर रही है। गौरतलब है कि मॉडल टाउन शहर के सबसे पॉश एरिया में आता है। फिलहाल पुलिस ने दावा किया है कि जल्द ही लुटेरों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। जालंधर में लूटपाट की यह पहली घटना नहीं है। इससे पहले भी एटीएम और बैंक में लूट की घटनाओं को अपराधी अंजाम दे चुके हैं।

बांग्लादेशी तस्करों ने बीएसएफ जवानों पर किया हमला, जवाबी कार्रवाई में एक मारा गया

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल के मालदा जिले के अंतर्गत आने वाली नवादा चौकी पर तैनात बीएसएफ की 70वीं वाहिनी के जवानों पर बांग्लादेशी तस्करों ने जानलेवा हमला किया। घटना मंगलवार देर रात करीब 1।40 बजे की है। जवाबी कार्रवाई में सीमा सुरक्षा बल के जवानों ने अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास एक बांग्लादेशी तस्कर को मुठभेड़ में मार गिराया। बीएसएफ के वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, मंगलवार रात करीब 1।40 बजे नवादा सीमा चौकी पर तैनात बीएसएफ के जवानों को अंतराष्ट्रीय सीमा पर लगी कंटीली तारों की फैंसिंग के करीब 15-20 संदिग्ध तस्करों की हरकत दिखाई दी। इसी बीच, बांग्लादेश की तरफ से भी करीब 15-20 तस्कर हथियार और डंडों के साथ अंतराष्ट्रीय सीमा का उल्लंघन करते हुए फैंसिंग के नजदीक आ गए। तस्करों की हरकत को देखते ही ड्यूटी पर तैनात बीएसएफ जवान ने उन्हें रुकने की चेतावनी दी। जि सके बाद, बांग्लादेशी तस्करों ने बीएसएफ के जवान के ऊपर पत्थर और हंसियों से हमला कर दिया। जवाबी कार्रवाई में जवानों ने पहले नॉन लीथल सलन ग्रेनेड से तस्करों को रोकने तथा भगाने का प्रयास किया, लेकिन इसका उनके ऊपर कोई असर नही हुआ। तो बीएसएफ जवानों ने फायर किए, जिसमें फैंसिंग के नजदीक एक बांग्लादेशी तस्कर घायल होकर गिर गया और बाकी तस्कर घायल साथी को छोड़कर अंधेरे का फायदा उठाते हुए भागने में सफल रहे। मौके पर प्राथमिक उपचार के बाद घायल तस्कर को मालदा मेडिकल हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया।

विधायकों के पार्टी छोड़कर जाने से जूझ रही कांग्रेस

नई दिल्ली । गोवा में 2017 में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए 40 सदस्यीय सदन में 17 सीट जीतकर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी थी, लेकिन न तो वह सरकार बना पाई और न ही अपने सदस्यों को एकजुट रखने में कामयाब हो पाई, जिससे उसके पास मौजूदा सीट की संख्या गिरकर मात्र दो रह गई है। हालांकि पार्टी अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले खुद को मजबूत दिखाने की कोशिश कर रही है और उसका कहना है कि विधायकों के पार्टी छोड़कर जाने से वह विचलित नहीं है। गोवा प्रदेश कांग्रेस समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष एलेक्सो रेजिनाल्डो लौरेंको भी उन विधायकों में शामिल हो गए, जिन्होंने पिछले पांच साल में पार्टी छोड़ी है। उल्लेखनीय है कि पार्टी ने आगामी विधानसभा चुनाव के लिए पिछले सप्ताह आठ उम्मीदवारों के नामों की पहली सूची की घोषणा की थी, जिसमें लौरेंको का भी नाम शामिल था। लौरेंको के इस्तीफे से पहले भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की गोवा इकाई के चुनाव प्रभारी देवेंद्र फडणवीस ने कहा था, ''कांग्रेस तीन पहियों वाली एक 'रिक्शा पार्टी' बनकर रह गई है और जल्द ही वह केवल दो विधायकों के साथ एक 'साइकिल पार्टी' में बदल जााएगी।'' फडणवीस ने भविष्यवाणी की थी कि प्रतापसिंह राणे भी कांग्रेस छोड़ देंगे, लेकिन वह अब भी कांग्रेस में हैं। कांग्रेस को सबसे बड़ा झटका 2019 में लगा था, जब विपक्ष के तत्कालीन नेता चंद्रकांत कावलेकर के नेतृत्व में 10 विधायकों का एक समूह पार्टी छोड़कर बीजेपी में शामिल हो गया था। विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे निकट आ रहे हैं, एक के बाद एक और विधायक पार्टी छोड़कर जा रहे हैं।

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशक : सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास , (भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक :सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/751000 (Subject to Surat jurisdiction)

क्रांति समय
Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पहला कॉलम

वैष्णो देवी जाने वाले यात्रियों के लिए रेलवे ने चलाई स्पेशल ट्रेन

फिरोजपुर । रेल विभाग ने अमृतसर-श्री वैष्णो देवी कटरा के बीच बुधवार को स्पेशल अप-डाउन रेलगाड़ी चलाने का ऐलान किया है। डीआरएम दफ्तर की तरफ से जारी की गई सूचना के अनुसार अमृतसर से स्पेशल ट्रेन नंबर 04605 बुधवार सुबह 5।50 बजे रवाना हो कर बटाला, गुरदासपुर, पठानकोट, कठूडा, जम्मूतवी, उधमपुर से होते हुए दोपहर 12:20 बजे वैष्णो देवी कटरा स्टेशन पर पहुंचेगी। उस तरफ से स्पेशल ट्रेन नंबर 04606 सुबह 6 बजे रवाना हो कर उधमपुर, जम्मूतवी, कठुआ, पठानकोट, गुरदासपुर, बटाला के रास्ते होते हुए दोपहर 12:30 बजे अमृतसर पहुंचेगी। 024672 -02471 जालंधर कैंट-बांद्रा टर्मिनल के बीच स्पेशन ट्रेन जालंधर कैंट से शाम 3.30 बजे चल कर शाम 4.10 पर बांद्रा टर्मिनल पहुंचेगी। ट्रेन नंबर 02471 गुरूवार को बांद्रा टर्मिनल से सुबह 11 बजे पहुंचेगी और अगले दिन सुबह 11.10 बजे जालंधर से कैंट पहुंचेगी। यह फगवाड़ा, लुधियाना, अम्बाला कैंट में भी रुकेगी।

कश्मीर में हिंदू-सिखों पर हमला करने वाले 4 आतंकी उतारे गए मौत के घाट

जम्मू । सीमा पार से प्रायोजित आतंकवादियों ने जम्मू-कश्मीर में धार्मिक अल्पसंख्यकों (हिंदू-सिख) पर कुछ हमले किए हैं और इनमें शामिल चार आतंकवादियों को मार गिराया गया है। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने बुधवार को संसद में यह जानकारी दी। राज्यसभा में एक प्रश्न का लिखित जवाब देते हुए गृहराज्यमंत्री ने कहा कि कश्मीर में आतंकी घटनाओं में कमी दर्ज की गई है, 2018 में जहां 417 घटनाएं हुईं, वहीं, इस साल 30 नवंबर तक 203 घटनाएं हुई हैं। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर में कानून-व्यवस्था की स्थिति में सुधार हुआ है। मंत्री ने कहा, %%हालांकि, सीमा पार से प्रायोजित आतंकवादियों की ओर से धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को निशाना बनाकर कुछ हमले हुए हैं।%% मंत्री ने जवाब में कहा धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हमले को लेकर 7 लोगों को गिरफ्तार किया गया है, जबकि इन घटनाओं में शामिल 4 आतंकवादी मारे गए हैं। एक भगोड़ा सहित 7 आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दायर की गई है। राय ने कहा कि आतंकी हमलों को रोकने के लिए एक मजबूत सुरक्षा और खुफिया तंत्र काम कर रहा है। इसके अलावा दिन रात निगरानी, पट्रोलिंग और आतंकियों के खिलाफ सक्रियता से अभियान चलाए जा रहे हैं। मंत्री ने यह भी कहा कि आतंकी हमलों को रोकने के लिए चौबीसो घंटे नाकाओं पर जांच की जा रही है और अहम ठिकानों पर रोड ओपनिंग पार्टीज को तैनात किया गया है। राय ने यह भी कहा कि आतंकवाद से संबंधित मामलों की त्वरित और प्रभावी जांच और अभियोजन के लिए जम्मू-कश्मीर सरकार द्वारा राज्य जांच एजेंसी (एसआईए) का गठन किया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि एसआईए राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) और अन्य केंद्रीय एजेंसियों के साथ समन्वय के लिए नोडल एजेंसी होगी।

अखिलेश यादव का वादा सपा की सरकार बनी तो महिलाओं को देंगे तीन गुनी पेंशन

मैनपुरी । भाजपा ने महिलाओं की पेंशन छीन ली और उनका हक भी। सपा सरकार बनने के बाद महिलाओं को तीन गुनी पेंशन दी जाएगी। भाजपा सरकार में हरकोई परेशान है। अखिलेश यादव ने कहा कि एटा, कासगंज, मैनपुरी सभी सीटें जिताकर भेजो। अपने आप सरकार बन जाएगी। उन्होंने कहा कि कोरोना काल में जब लोगों को दवाई की जरूरत थी। तब भाजपा सरकार न दवा दे सकी, न ही ऑक्सीजन और बिस्तर। समय पर ऑक्सीजन और दवा मिल जाती तो न जाने कितने लोगों की जान बच जाती। यह लोग मां गंगा की बात करते हैं। गंगाजी में हजारों लाशें बहकर चली गई। भाजपा ने पुरानी पेंशन मांगने वालों को, शिक्षामित्रों को अपमानित किया है। यह लोग अपने हक की लड़ाई लड़ रहे हैं। भाजपा ने नौकरी छीनकर सभी को बेरोजगार कर दिया।उन्होंने कहा कि भाजपा प्रदेश में टॉपटेन अपराधियों की सूची जारी करे।

भारतीय सेना में शामिल हुआ स्वदेशी बख्तरबंद वाहन एईआरवी का पहला सेट

नई दिल्ली (एजेंसी) ।

पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) को लेकर भारत और चीन के बीच में लंबे समय से गतिरोध बना हुआ है। इसके अलावा पाकिस्तान के साथ भी हमारे रिश्ते अच्छे नहीं हैं। ऐसे में देश की तीनों सेनाएं खुद को मजबूत बनाने में जुटी हैं। थल सेना प्रमुख जनरल मनोज मुकुंद नरवणे ने अगली पीढ़ी के बख्तरबंद इंजीनियर टोही वाहन (एईआरवी) और अन्य उपकरणों के पहले सेट को सेना की इंजीनियर्स कोर को सौंपा है। सेना प्रमुख जनरल मनोज मुकुंद नरवणे ने पुणे के पास खड़की में बॉम्बे इंजीनियर ग्रुप (बीईजी) में एक समारोह में वाहनों को शामिल किया और उन्हें झंडी दिखाकर रवाना किया। इस बख्तरबंद इंजीनियर टोही वाहन की सबसे खास बात यह है कि ये पूरी तरह से स्वदेशी है। इसे रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा डिजाइन किया गया है और आयुध निर्माणी मेडक तथा भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड पुणे द्वारा बनाया गया है। सेना प्रमुख ने कहा इन स्वदेशी उपकरणों को शामिल करने से विशेष रूप से पश्चिमी मोर्चे पर संचालन को बढ़ावा मिलेगा और रक्षा उपकरणों के निर्माण में आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक कदम होगा। उन्होंने बताया कि एईआरवी की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी, विशेष रूप से हमारे बख्तरबंद फॉर्मेशन, स्ट्राइक कोर के लिए, जो मुख्य रूप से पश्चिमी सीमा पर काम कर रहे हैं, यह प्लेटफॉर्म टोही की प्रक्रिया को गति देगा जो पहले मैन्युअल रूप से किया जाता था।

सेना प्रमुख ने कहा कि एंटी टैंक और एंटी पर्सनल माइन की एक नई श्रृंखला का विकास किया जा रहा है। यह आवश्यक हो गया है क्योंकि हमारी सभी माइन्स पुराने प्रोटोकॉल की थीं।

बैलिस्टिक मिसाइल 'प्रलय' से लगाया सटीक निशाना, परीक्षण सफल होने पर रक्षामंत्री ने दी बधाई

नई दिल्ली (एजेंसी)।

ओडिशा तट के पास सतह से सतह पर मार करने में सक्षम कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल 'प्रलय' का बुधवार को सफल परीक्षण किया। रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डीआरडीओ) के सूत्रों ने यह जानकारी दी। डीआरडीओ द्वारा विकसित ठोस-ईंधन, युद्धक मिसाइल भारतीय बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम के 'पृथ्वी रक्षा वाहन' पर आधारित है। सूत्रों ने बताया कि एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप से सुबह करीब साढ़े दस बजे प्रक्षेपित की गई मिसाइल ने मिशन के सभी उद्देश्यों को पूरा किया। निगरानी उपकरणों के जरिए तट रेखा से इसके प्रक्षेपण की निगरानी की गई। 'प्रलय' 350-500 किलोमीटर से कम दूरी की सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल है और यह 500-1000 किलोग्राम का भार वहन करने में सक्षम है। डीआरडीओ के अधिकारी ने बताया कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ट्रायल के लिए डीआरडीओ और संबंधित टीमों को बधाई दी। उन्होंने तेजी से विकास और सतह से सतह पर मार करने वाली आधुनिक मिसाइल के सफल लॉन्च के लिए डीआरडीओ की सराहना की। सचिव डीडी आर एंड डी और अध्यक्ष डीआरडीओ डॉ जी सतीश रेड्डी ने टीम की सराहना की और कहा कि यह मिसाइल आधुनिक तकनीकों से लैस एक नई पीढ़ी की सतह से सतह पर मार करने वाली मिसा

ओमिक्रॉन को लेकर सतर्क मोदी सरकार, राज्यों को वॉर रूम सक्रिय, टेस्टिंग और निगरानी बढ़ाने को कहा

केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव ने लिखा सभी राज्यों को पत्र

नई दिल्ली (एजेंसी)।

देश में ओमिक्रॉन के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं।अभी तक देश में 14 राज्यों में 220 केस सामने आ चुके हैं।ओमिक्रॉन के बढ़ते हुए मामलों को देखकर केंद्र सरकार ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को पत्र लिखकर संक्रमण को रोकने के लिए कड़े कदम उठाने के निर्देश दिए हैं।केंद्र ने ओमिक्रॉन को डेल्टा से तीन गुना ज्यादा संक्रामक बताकर वॉर रूम सक्रिय करने की सलाह दी है।साथ ही कोरोना से जुड़े हर अपडेट पर नजर रखते हुए स्थानीय और जिला स्तर पर कड़े और त्वरित कदम उठाने के भी निर्देश दिए हैं।केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव राजेश भूषण ने राज्यों को लिखे पत्र में कहा है कि टेस्टिंग और निगरानी बढ़ाने के अलावा रात में कर्फ्यू लगाने, बड़ी सभाओं पर रोक लगाने, शादियों और अंतिम संस्कारों में लोगों की संख्या को सीमित करने जैसे कदम उठाने को कह दिया हैं। केंद्र सचिव ने अपने पत्र में जिला स्तर पर कंटेनमेंट जोन बनाने, कंटेनमेंट जोन की सीमा तय करने, केसों की लगातार समीक्षा करने, अस्पतालों में सुविधाएं बढ़ाने जैसे जरूरी कदमों को उठाने की सलाह दी है। केंद्र ने पत्र में कहा है कि इस तरह की रणनीति से राज्य के बाकी हिस्सों में संक्रमण फैलने से पहले ही स्थानीय स्तर पर काबू में होगा। भूषण ने अपने पत्र में राज्यों को लिखा, वॉर रूम, इमरजेंसी ऑपरेशन सेंटर्स को सक्रिय करें।केस ट्रेंड्स का एनालिसिस करें, भले ही केस कम हों, जिला और स्थानीय स्तर पर सक्रिय कार्रवाई करते रहें।फील्ड अधिकारियों के साथ नियमित समीक्षा करें।इन कदमों से निश्चित तौर पर संक्रमण को कम करने में मदद मिलेगी।

कोरोना के नए क्लस्टर कंटेनमेंट जोन, बफर जोन बनाए जाए, कंटेनमेंट में ही संक्रमण को रोकने के लिए कड़े कदम उठाए जाए।सभी क्लस्टर में सैंपल को जीनोम सिक्वेंसिंग के लिए भेजा जाए।

कोरोना की बूस्टर खुराक देना कब शुरू करेगी केंद्र सरकार : राहुल गांधी

नयी दिल्ली ।

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने बुधवार को कहा कि देश की बड़ी आबादी का अब तक टीकाकरण नहीं किया जा सका है, ऐसे में सरकार को बताना चाहिए कि लोगों को टीके की तीसरी खुराक (बूस्टर डोज) देना कब शुरू किया जाएगा। उन्होंने टीकाकरण के आंकड़ों का एक चार्ट साझा करते हुए ट्वीट किया बहुतायत आबादी का अब तक टीकाकरण नहीं हुआ है। सरकार बूस्टर खुराक देना कब शुरू करेगी? कांग्रेस नेता ने जो चार्ट साझा किया है, उसमें कहा गया है कि टीकाकरण की मौजूदा गति से 31 दिसंबर, 2021 तक देश की 42 प्रतिशत आबादी का ही टीकाकरण हो सकेगा और इस वर्ष के खत्म होने तक 60 प्रतिशत आबादी का टीकाकरण करने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए इस साल के आखिरी सप्ताह में प्रतिदिन 6.1 करोड़ खुराक देनी पड़ेगी।

इसमें यह भी दर्शाया गया है कि पिछले एक सप्ताह के दौरान प्रतिदिन औसतन 58 लाख खुराक दी गई।

भारत एक मुक्त और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए प्रतिबद्ध: जयशंकर

भारत-जापान साझेदारी ने वैश्विक मामलों पर अभिसरण के साथ प्रगति की

नई दिल्ली (एजेंसी)।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि भारत एक मुक्त और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने यथास्थिति के एकतरफा बदलाव और सैन्यीकरण सहित जटिल कार्रवाइयों पर चिंता भी व्यक्त की। विदेश मंत्री भारत-जापान हिंद-प्रशांत मंच को संबोधित कर रहे थे। जापान के साथ भारत के संबंधों को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय और वैश्विक मामलों पर अभिसरण के साथ साझेदारी ने काफी प्रगति की है। जयशंकर ने ट्वीट किया, आज भारत-जापान हिंद-प्रशांत मंच को संबोधित किया। रेखांकित किया कि भारत-जापान साझेदारी ने क्षेत्रीय और वैश्विक मामलों पर अभिसरण के साथ काफी प्रगति की है। उन्होंने याद किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे क्षेत्र में सबसे स्वाभाविक संबंध करार दिया था।

हालांकि, जयशंकर ने किसी देश का नाम नहीं लिया, लेकिन हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती सैन्य ताकत को लेकर बढ़ती वैश्विक चिंताओं की पृष्ठभूमि में उनकी टिप्पणी सामने आई है।

प्रियंका के हैकिंग के आरोपों के बाद आईटी मंत्रालय एक्शन में

नई दिल्ली । कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने केंद्र सरकार पर आरोप लगाए हैं कि उनके बच्चों के इंस्टाग्राम अकाउंट हैक किए जा रहे हैं। प्रियंका के इन आरोपों के बाद आईटी मंत्रालय एक्शन में आ गया है और अब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम से सवाल-जवाब किए जा सकते हैं। सूत्रों के मुताबिक, मामले पर संज्ञान लेते हुए आईटी मंत्रालय इसकी जांच के आदेश भी दे सकता है। मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक इस मामले को आईटी मंत्रालय ने पूरी गंभीरता से लिया है। पूरे मामले में इंस्टाग्राम से जानकारी मांगी जाएगी। मंत्रालय जो जानकारी मांगेगा, उसमें पहली जानकारी होगी कि कब प्रियंका गांधी के बच्चों का इंस्टाग्राम हैक हुआ? कब प्रियंका गांधी के बच्चों के इंस्टाग्राम हैक होने की जानकारी इंस्टाग्राम को दी गई? किसने बच्चों के इंस्टाग्राम हैक किए? क्या कोई आपत्तिजनक या बेजा पोस्ट बच्चों के इंस्टाग्राम अकाउंट से किया गया? कितना समय इंस्टाग्राम हैंडल को वापस हासिल करने में लगा? मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक प्रियंका गांधी ने उत्तर प्रदेश में चुनाव के दौरान मीडिया में हैकिंग का आरोप लगाया था, जिस पर मंत्रालय ने स्वतः संज्ञान लिया है। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए मंगलवार को कहा था कि उनके बच्चों के इंस्टाग्राम अकाउंट भी हैक किए जा रहे हैं।

कर्नाटक, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के इन शहरों में सुबह महसूस किए गए भूकंप के झटके

नई दिल्ली (एजेंसी) ।

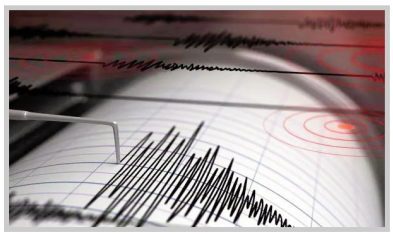

देश के कई राज्यों में बुधवार को भूकंप के झटके महसूस किए गए। नेशनल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी के मुताबिक, बुधवार सुबह बेंगलुरू में रिक्टर पैमाने पर 3.3 तीव्रता वाले भूकंप के झटके आए। एजेंसी के अनुसार, भूकंप का केंद्र बेंगलुरू से 66 किलोमीटर उत्तर-उत्तरपूर्व में था। भूकंप भारतीय समयानुसार सुबह 7:14 बजे सतह से 23 किलोमीटर की गहराई में आया। वहीं बुधवार सुबह अरूणाचल प्रदेश के पेंगीन के निकट रिक्टर पैमाने पर 4.3 तीव्रता वाले भूकंप के झटके महसूस किए गए। भूकंप का केंद्र पेंगीन से 169 किलोमीटर उत्तर-उत्तरपूर्व में था। भूकंप भारतीय समयानुसार सुबह 4:06 बजे सतह से 111 किलोमीटर की गहराई में आया। सिक्किम के युक्सोम शहर के निकट रिक्टर पैमाने पर 3.7 तीव्रता वाले भूकंप के झटके महसूस किए गए। भूकंप का केंद्र युक्सोम से 154 किलोमीटर उत्तर-उत्तरपश्चिम में था। भूकंप भारतीय समयानुसार सुबह 3:01 बजे सतह से 10 किलोमीटर की गहराई में आया। वहीं बुधवार सुबह पोर्ट ब्लेयर के निकट रिक्टर पैमाने पर 4.3 तीव्रता वाले भूकंप के झटके महसूस किए गए। भूकंप का केंद्र पोर्ट ब्लेयर से 172 किलोमीटर दक्षिणपूर्व में था। भूकंप भारतीय समयानुसार सुबह 2:38 बजे सतह से 34 किलोमीटर की गहराई में आया।

पांच साल में 4177 लोगों को दी गई भारत की नागरिकता, 10 हजार से अधिक आवेदन लंबित

नई दिल्ली (एजेंसी)।

केंद्र सरकार ने बुधवार को संसद में बताया कि वर्ष 2016 से 2020 के दौरान कुल 4177 लोगों को भारतीय नागरिकता प्रदान की गई है, जबकि नागरिकता के लिए 10,635 आवेदन इस समय लंबित हैं। केंद्रीय गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय ने राज्यसभा में पूछे गए एक सवाल के लिखित जवाब में यह जानकारी दी। सन 2016 से 2020 के दौरान भारतीय नागरिकता पाने वाले लोगों का ब्योरा देते हुए उन्होंने कहा वर्ष 2016 में 1106, 2017 में 817, 2018 में 628, 2019 में 987 और 2020 में 639 व्यक्तियों को भारतीय नागरिकता प्रदान की गई। इस अवधि में अब तक 4177 लोगों को भारतीय नागरिकता प्रदान की गई है। 2021 के कितने लोगों को भारतीय नागरिकता दी गई, इसका केंद्रीय मंत्री ने कोई ब्योरा नहीं दिया। भारतीय नागरिकता संबंधी लंबित आवेदनों के बारे में पूछे जाने पर राय ने कहा कि 14 दिसंबर 2021 की स्थिति के अनुसार कुल 10, 635 आवेदन अभी लंबित हैं। उनके मुताबिक सबसे अधिक 7306 आवेदन पाकिस्तान के लंबित हैं। इसके बाद अफगानिस्तान के 1152 आवेदन लंबित है। 428 आवेदन ऐसे लोगों के हैं जो राज्यविहिन हैं। एक अन्य सवाल के जवाब में राय ने कहा कि सन 2018 से 2021 के दौरान पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से हिंदू, सिख, जैन और ईसाई अल्पसंख्यक समूहों से नागरिकता हेतु कुल 8244 आवेदन प्राप्त हुए और इनमें से 3117 व्यक्तियों को भारत में नागरिकता प्रदान की गई है।

कार्यालय ऑफिस
क्रांति समय दैनिक समाचार
में प्रेसनोट,नोटिस,वेपार
संबंधित संपर्क करें
पताः- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-9879141480
ईमेलः-krantisamay@gmail.com

समस्या आपकी हमें भेजे
अपने क्षेत्र में समस्याएं
हमें लिखे या बताएँ
और समस्याएं का हल
संबंधित विभाग से मिलेगा
मोबाईलः-987914180
या फोटो,वीडियो हमें भेजे

कार्यालय ऑफिस
क्रांति समय दैनिक समाचार
भारत के अन्य राज्यों में जिला ब्यूरों
और अन्य शहर,ग्राम में पत्रकारों
की नियुक्त के लिए आवेदन कर सकते है
पताः- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-9879141480
ईमेलः-krantisamay@gmail.com